।।ओ३म्।।

पाक्षिक

परोपकारी

• वर्ष ५९ • अंक १२ • मूल्य ₹१५ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र • जून (द्वितीय) २०१७

श्रीमती ज्योत्स्ना 'धर्मवीर'

आर्य वीरांगनाओं द्वारा जूडो-कराटे एवं तलवार का अभ्यास

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित आर्य वीरांगना दल, अजमेर शिविर की झलकियाँ

यज्ञोपवीत संस्कार

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५९ अंक : १२

दयानन्दाब्द: १९३

विक्रम संवत्: आषाढ़ कृष्ण २०७४

कलि संवत्: ५११८

सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११८

सम्पादक

डॉ. दिनेशचन्द्र शर्मा

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा,

केसरगंज, अजमेर- ३०५००१

दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर

वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।

दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु.,

त्रिवार्षिक-५८० रु.,

आजीवन-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

एक प्रति - १५/- रु.

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस.डॉलर

द्विवार्षिक-९५ पा./१५२ डॉ.,

त्रिवार्षिक-१४० पा./२२५ डॉ.,

आजीवन-(=१५वर्ष)-५००पा./८०० डॉ.

एक प्रति - ३ पाउण्ड

एक प्रति - ४ डॉलर

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०

ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षाः,
सत्यव्रता रहितमानमलापहाराः।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकाराः।।

RNI. No. ३९५९ / ५९

परोपकारी

जून द्वितीय २०१७

अनुक्रम

०१.	महर्षि दयानन्द के शिक्षादर्शन की....	सम्पादकीय	०४
०२.	संध्योपासना क्यों-४	डॉ. धर्मवीर	०७
०३.	कुछ तड़प-कुछ झड़प	प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु	१३
०४.	वेद में योग साधना के संकेत	आ. उदयवीर शास्त्री	१९
०५.	लोकोत्तर धर्मवीर-३	तपेन्द्र वेदालंकार	२३
०६.	वेद गोष्ठी-२०१७ के लिए निर्धारित विषय		२६
०७.	अमृतमश्नुते	शिवनारायण उपाध्याय	२८
०८.	शंङ्का - समाधान	प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु	३२
०९.	संस्था-समाचार		३५
१०.	पाठकों की प्रतिक्रिया		३७
११.	सुना है, आज हमारा जिक्र हुआ है..	सोमेश 'पाठक'	३९
१२.	आर्यजगत् के समाचार		४२

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

महर्षि दयानन्द के शिक्षादर्शन की प्रासंगिकता

उन्नीसवीं शती के पुनर्जागरण आन्दोलन में महर्षि दयानन्द एकमात्र ऐसे उद्‌भट विचारक थे, जिन्होंने भारत (बल्कि सम्पूर्ण मानवता) के उत्थान की विस्तृत योजना प्रस्तुत की। भारतीय महामानवों के इतिहास में देखा जाए तो यह घटना हजारों वर्ष बाद घटित हुई। महर्षि की आर्ष दृष्टि ने जहाँ वैदिक वाङ्मय को शुद्धता प्रदान की वहीं मनुष्यमात्र के कल्याण हेतु एक ऐसा व्यावहारिक कार्यक्रम प्रदान किया, जिसके बिना एक आदर्श मानव का निर्माण असंभव है। ऋषियों के चिन्तन, परम्परा और शैली का निर्वहन करते हुए महर्षि दयानन्द शिक्षा को इस प्रकार परिभाषित करते हैं-''जिससे विद्या, सभ्यता, धर्मात्मता, जितेन्द्रियतादि की बढ़ती होवे और अविद्यादि दोष छूटें, उसको 'शिक्षा' कहते हैं।''

निष्पक्ष दृष्टि से विचार करने पर महर्षि अकेले ऐसे शिक्षाशास्त्री हैं, जो अपनी शिक्षा-व्यवस्था में मानव-जीवन के प्रत्येक पक्ष का स्पर्श करते हैं-आध्यात्मिक, सामाजिक, वैज्ञानिक, शारीरिक, मनोवैज्ञानिक इत्यादि। उनकी शिक्षा-व्यवस्था में 'ईश्वर से लेके पृथिवी पर्यन्त पदार्थों के सत्य विज्ञान' का समावेश है। हम नहीं समझते कि उनके समकालीन और पश्चाद्वर्ती किसी शिक्षाशास्त्री का दृष्टिफलक इतना व्यापक और व्यावहारिक रहा होगा।

शिक्षा-व्यवस्था सामान्यत: राज्य का विषय रहती है और शासन के विशेषज्ञ अधिकारियों तथा शिक्षाशास्त्रियों से यह आशा की जाती है कि वे सर्वसमावेशी दृष्टि से कार्य करते हुए शिक्षा को मानवोत्थान के उपकरण के रूप में प्रयुक्त करेंगे। स्वाभाविक है कि ऐसा करते हुए उनकी योग्यता, चिन्तन इत्यादि गुण प्रशस्त होंगे। परन्तु आगे लिखे एक घटनाक्रम से न केवल अधिकारियों प्रत्युत राजकीय शिक्षाशास्त्रियों की योग्यता और उद्देश्यों पर बृहत् प्रश्नचिह्न लग जाता है।

अभी हाल ही में एन.सी.ई.आर.टी. (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्) नई दिल्ली ने **''आधुनिक भारत के सामाजिक विचार-स्वामी विवेकानन्द के समकालीन''** पुस्तक प्रकाशित की थी जिसके आवरण पृष्ठ पर अन्य चिन्तकों के साथ महर्षि दयानन्द का भी आवक्ष फोटो प्रकाशित किया गया था, लेकिन पुस्तक में संगृहीत (1) बहरामजी मालाबारी, (2) कॉर्नेलिया सोराबजी, (3) गिजुभाई बधेका, (4) गुणाभिराम बरुआ, (5) ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, (6) कादंबिनी गांगुली, (7) मधुसूदन दास, (8) पंडिता रमाबाई, (9) पंडित बृजमोहन दत्तात्रेय 'कैफी', (10) राजकुमारी अमृत कौर, (11) सर सैय्यद अहमद खाँ, (12) सिस्टर निवेदिता, (13) सुब्रह्मण्यम भारती के निबंधों में महर्षि दयानन्द का कोई भी उल्लेख नहीं था। यह देखकर खेद हुआ और तदुपरान्त एन.सी.ई.आर.टी. को सभा की ओर से क्रमांक 107, दिनांक 11-5-2017 को एतद्विषयक पत्र प्रेषित कर जानकारी चाही गई, जिसके क्रम में दिनांक 29 मई, 2017 को एन.सी.ई.आर.टी. की प्रो. मंजु भट्ट ने दूरभाष पर सूचित किया कि उक्त **''आधुनिक भारत के सामाजिक विचार-स्वामी विवेकानन्द के समकालीन''** पुस्तक में **प्रचलित** समाज चिन्तकों को स्थान दिया गया था और महर्षि दयानन्द के **प्रचलित चिन्तक नहीं** होने के कारण निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा गठित समिति ने जिन (महापुरुषों-शिक्षाशास्त्रियों) से सम्बन्धित निबन्धों का चयन किया वे ही प्रकाशित किए गए हैं। ये जानकर मुझे अत्यन्त आश्चर्य हुआ और उनसे मैंने दूरभाष पर कहा कि शायद आप महर्षि दयानन्द के शिक्षा, समाज, धर्म, राजनीति इत्यादि के विषय में जानती नहीं हैं। जिन निबन्धों का संकलन किया गया है उनमें महर्षि दयानन्द के समकालीन ही नहीं अपितु उनके पूर्ववर्ती चिन्तकों का नाम भी संकलित किया गया है, जिनके नाम पर एक भी संस्था आज जनसामान्य के प्रचलन में नहीं है। आर्य समाज, डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाएँ एवं गुरुकुलों से आज कौन भारतीय है जो परिचित नहीं है? वर्तमान में जब यह कहा जाता है कि आज भारतीय संस्कृति से समन्वित सरकार है और उसमें ही वैदिक संस्कृति और दर्शन के पुरोधा महर्षि दयानन्द

को स्कूली शिक्षा के सबसे बड़े केन्द्र एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा जनसामान्य में प्रचलित न मानकर उन्हें महत्त्वपूर्ण नहीं माना गया। यह इस बात का संकेत है कि वर्तमान माननीय नरेन्द्र मोदी की सरकार के अधीन कार्यरत विभिन्न सरकारी संस्थाएँ आज भी उपनिवेशी काल से उत्पन्न विगत 60 वर्षों के शैक्षिक चिन्तन को ही पल्लवित और पुष्पित कर रही हैं।

औपनिवेशिक काल में प्राचीन भारतीय शिक्षा-व्यवस्था का उन्मूलन किया गया, जिसके कारण भारतीय शिक्षा के उदात्त मूल्यों से मानव-निर्माण की सामाजिक व्यवस्था तिरोहित हो गई। वस्तुत: शिक्षा से ही मनुष्य संस्कृति का महत्त्व स्वीकार कर चरित्र-निर्माण के आधारभूत जीवन मूल्यों को स्वीकार करता है, जिसमें शिक्षक, शिक्षार्थी और शिक्षा केन्द्र- तीनों की महत्वपूर्ण भूमिका है। राजनीतिज्ञों में महात्मा गांधी अच्छे शिक्षाशास्त्री माने जाते हैं। उन्होंने 20 अक्टूबर, 1931 को लंदन के चैथम हाउस में उद्‌बोधन देते हुए कहा था, ''अंग्रेज जब भारत आए तब उन्होंने यहां की स्थिति को यथावत् स्वीकार करने के स्थान पर उसका उन्मूलन करना प्रारम्भ किया। उन्होंने मिट्टी कुरेदी, जड़ों को कुरेद कर बाहर निकाला और उन्हें खुला ही छोड़ दिया।'' परिणाम यह हुआ कि शिक्षा का वह रमणीक वृक्ष (ब्यूटीफुल ट्री) नष्ट हो गया। महर्षि दयानन्द ने भारतीय शिक्षा को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में स्थापित करने के लिए सत्यार्थ-प्रकाश, संस्कारविधि, वर्णोच्चारण शिक्षा, व्यवहारभानु इत्यादि में शिक्षा से पुरुषार्थों की प्राप्ति का मार्ग विवेचित एवं प्रस्तुत किया। इसी के आधार पर उनके देहावसान के पश्चात् डी.ए.वी. कॉलेज खोलने का प्रस्ताव लाहौर में पारित किया गया जिसमें निम्नलिखित उद्देश्यों को चिह्नित किया गया था-

1. हिन्दी साहित्य के अध्ययन को उत्साहित करना।
2. शास्त्रीय, संस्कृत एवं वेदों के अध्ययन को प्रोत्साहित करना।
3. अंग्रेजी साहित्य एवं विज्ञान को बढ़ावा देना।
4. तकनीकी शिक्षा के लिए साधन जुटाना।
5. भारतीयों द्वारा शिक्षण संस्थाओं की संचालन व्यवस्था।
6. सरकार से अनुदान तथा आर्थिक सहायता न लेना।
7. नि:शुल्क शिक्षा प्रदान करना।

लाला लाजपतराय ने इस सम्बन्ध में लिखा भी था कि वर्तमान शिक्षा-पद्धतियों के अवगुणों को दूर करने के लिए ही डी.ए.वी. कॉलेजों की स्थापना हमारा लक्ष्य है जिसके द्वारा शिक्षा के स्वरूप को राष्ट्रीय बनाया जाये। वस्तुत: शिक्षा-व्यवस्था की रचना इस भाँति होनी चाहिए कि वह बन्धनों को दृढ़ बना सके जो व्यक्ति को एक राष्ट्रीयता से आबद्ध करती हो।

इसी प्रकार स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल व्यवस्था की महती आवश्यकता को रेखांकित करते हुए कहा कि सत्यार्थ-प्रकाश और ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वेद-वेदांगों की शिक्षा के साथ-साथ बालकों को अन्य सब प्रकार की उपयुक्त शिक्षा दी जानी चाहिए। उन्हें राजविद्या, शिल्प, गणित, ज्योतिष्, भूगोल, चिकित्सा आदि शास्त्रीय और व्यावहारिक विषयों के अतिरिक्त देश-देशान्तरों की भाषाओं का ज्ञान कराया जाये।

इन शिक्षाविचारकों के आधार पर भारत के लाखों लोगों ने गुरुकुलों एवं डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं में अध्ययन कर व्यावसायिक कौशल, जीवन-कौशल, विषय-कौशल इत्यादि से स्वयं का ही निर्माण नहीं किया अपितु शिक्षा जैसे संवेदनशील विषय को और अधिक समृद्ध करने के लिए कार्यान्मुखी शिक्षा-व्यवस्था की और अधिक आवश्यकता अनुभव की।

वर्तमान सरकार के तीन वर्ष पूरे हो जाने पर भी नयी शिक्षानीति का मसौदा अभी तक स्पष्ट नहीं हो सका है। हमेशा नयी शिक्षा के नाम पर पाश्चात्य बिन्दुओं को समन्वित करते हुए नयी शब्दावली गढ़कर और प्रौद्योगिकी का नाम लेकर 21वीं सदी में शिक्षा की विश्वव्यापी सम्भावनाओं की आवश्यकताओं को रेखांकित कर छात्रों पर थोप दिया जाता है, जिससे आशानुरूप परिणाम अभी तक प्राप्त नहीं हुए हैं, शायद होंगे भी नहीं। चार्ल्स वुड ने 1854 में शिक्षानीति के जो विचार दिए और जिसे **'शिक्षा का मैगना कार्टा'** कहा गया, लगभग हर समिति इसके बाद चार्ल्स वुड के विचारों को येन-केन-प्रकरेण स्वीकार करती रही; चाहे डॉ. राधाकृष्ण आयोग हो या फिर नई शिक्षा नीति 1986 हो।

स्वतन्त्रता से पूर्व आर्य समाज की शिक्षण संस्थाओं ने राष्ट्रीयता और स्वराज्य की भावना को प्रदीप्त करते हुए जनसामान्य को वैदिक संस्कृति के उदात्त स्वरूप को स्वीकार करने के लिए प्रेरित किया था। इससे तत्कालीन शिक्षा डायरेक्टर जे.ए. रिची ने डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं को राजद्रोह और अनुशासनहीनता का केन्द्र घोषित किया था। आज आवश्यकता है कि हम भारत की सनातन शिक्षा-परम्परा को स्वीकार करते हुए भविष्य की ओर उन्मुख हों और वैश्विक धरातल के निर्माण का प्रारम्भ बिन्दु चूंकि व्यक्ति है, इसलिए इस व्यक्ति का निर्माण जिस शिक्षा-पद्धति से सम्भव है- वह वैदिक शिक्षा-व्यवस्था ही है और उसका महत्वपूर्ण पक्ष महर्षि दयानन्द के शिक्षा दर्शन में ही स्पष्टत: उल्लिखित हुआ है।

हम आशा करते हैं कि एक राष्ट्रवादी सरकार शिक्षा के परम्परागत वैदिक (भारतीय) तत्त्वों को समझेगी और तदनुसार विद्यालयों और विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में सुधार करके भावी और निर्माणाधीन पीढ़ी को समाज के लिए उपयोगी बनाने का कार्य संपन्न करेगी। यह ध्यान रखना आवश्यक है कि मात्र यान्त्रिकता और सूचनाओं मात्र से परिपूर्ण शिक्षा न केवल अधूरी है बल्कि मानव मूल्यों के लिए हानिकर भी है। महर्षि का सूत्रवाक्य है- ''शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति''; यही शिक्षा और व्यवस्था का भी उद्देश्य/ध्येय होना चाहिए।

<u>सा विद्या या विमुक्तये</u>

पुनश्च :- इस संपादकीय के छपते-छपते प्रो. मंजू भट्ट- विभागाध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान विभाग, एनसीईआरटी, नई दिल्ली का पत्र 187, दिनांक 29-5-2017 का प्राप्त हुआ जिसमें उन्होंने आश्वासन दिया है कि भविष्य में पुस्तक का पुनर्मुद्रण हुआ तो महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के बारे में एक अध्याय रखने का प्रयास करेंगी।

परोपकारिणी सभा आशान्वित है कि वैदिक विद्वानों के सहयोग से एन.सी.ई.आर.टी. महर्षि के शिक्षा विषयक विचारों का समावेश अपने प्रकाशनों में यथास्थान करेगी।

- दिनेश

ऋषि मेला २०१७ हेतु स्टॉल आवंटन

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष ऋषि मेला २७, २८, २९ अक्टूबर शुक्र, शनि, रविवार २०१७ को ऋषि उद्यान में आयोजित होगा। उसमें आर्य जगत् का साहित्य, हवन सामग्री, अन्यान्य सामग्री की स्टॉलें लगती हैं। प्रति स्टॉल किराया १००० रु. निर्धारित है। जिसकी राशि पहले जमा होगी उस क्रम से स्टॉलों का आवंटन होगा। जिन महानुभावों को जितनी स्टॉलों की आवश्यकता है, उसी अनुरूप राशि बैंक ड्राफ्ट द्वारा या नकद जमा करावें।

स्टॉल सुविधा:- कारपेट, दो टेबल, दो कुर्सी, २ ट्यूब लाईट प्रति स्टॉल। **स्टॉल साइज**- ७.५×१५ फीट।

ध्यातव्य- १. स्टॉल में रखी टेबल, कुर्सी आदि पूर्व निर्धारित सामग्री को इधर-उधर या अन्य स्टॉल में न बदलें। २. अतिरिक्त सामग्री की आवश्यकता हो तो टैन्ट हाउस के कर्मचारी से सम्पर्क कर प्राप्त करें तथा निर्धारित राशि तुरन्त भुगतान करें। ३. बिस्तर, रजाई, चादर, तकिया को टेन्ट हाउस कर्मचारी से प्राप्त कर निर्धारित राशि जमा करा दें। ४. स्टॉल व्यवस्थापक से स्टॉल संख्या, राशि की रसीद दिखाकर प्राप्त करें। बिना पूर्व अनुमति के स्टॉलों में सामान न रखें, न अधिकृत करें। ५. आपके सक्रिय सहयोग व अनुशासन की अपेक्षा है। अनियमितता को स्थान न देवें। ६. अपना मोबाइल (चलभाष) नवम्बर देना अति आवश्यक है। ७. आप अपना स्थाई पता अवश्य देवें। ८. स्टॉल में आप पुस्तकें/दवाईयाँ/अन्य सामग्री का उल्लेख अवश्य करें। ९. स्टॉल आवंटन हेतु अग्रिम राशि जमा करावें, अन्यथा विचार सम्भव नहीं होगा। १०. एक पासपोर्ट फोटो भिजवावें, जो परिचय पत्र के साथ अंकित हो। उसमें स्टॉल आवंटन संख्या भी अंकित किया जाएगा। ११. स्टॉल आवंटन की सूचना निर्धारित अवधि में दी जायेगी।

संध्योपासना क्यों-४

प्रवचनकर्त्ता - डॉ. धर्मवीर
लेखिका - सुयशा आर्य

यह लेख आचार्य धर्मवीर जी द्वारा बिलासपुर (छत्तीसगढ़) में दिये गये प्रवचन का संकलन है। ये प्रवचन एक निश्चित विषय पर दिये गये हैं, इसलिये अति उपयोगी हैं। इन प्रवचनों को आचार्य प्रवर की ज्येष्ठ पुत्री सुयशा आर्य द्वारा लेखबद्ध किया गया है। **सम्पादक**

पिछले अंक का शेष भाग...

दुनिया में कोई मनुष्य ऐसा नहीं है जिसे सहायता की आवश्यकता न हो। किसी को बैंक से लोन मिल जाता है, किसी को सेठ जी से आर्थिक सहयोग मिल जाता है, किसी को उसके भाई से उधार मिल जाता है, किसी को माता-पिता से सहायता मिल जाती है, कोई कहीं और से ले लेता है। हर एक को कुछ न कुछ चाहिए। थोड़ा न थोड़ा सहयोग चाहिए। किसी को किसी रूप में चाहिए, किसी को दूसरे रूप में चाहिए। हममें से हर व्यक्ति आश्रय की खोज में है। आलम्बन की खोज में है, सहारे की खोज में है। जब हमको दुनिया के सहारे नहीं मिलते, तो हम दु:खी हो जाते हैं। देखो जी, मैंने भाई के लिए इतना किया, मेरे भाई ने मेरा कुछ नहीं किया। हमारे माता-पिता की हमने सेवा की, माता-पिता ने हमको कुछ नहीं माना, सास-ससुर ने हमको कुछ नहीं दिया। अधिकारी ने हमारा कुछ नहीं माना। हमको लगता है कि हमारा कोई सहायक नहीं है, कोई मुसीबत में साथ देने वाला नहीं है।

संध्या से सबसे बड़ा जो लाभ होता है-वो तब होता है जब मनुष्य दु:खी होता है। इसके लिए सत्यार्थ प्रकाश का सातवाँ समुल्लास पढ़ लेना चाहिये। महर्षि दयानन्द सरस्वती सत्यार्थ प्रकाश में एक वाक्य लिखते हैं कि संध्या से मनुष्य के सामने यदि पहाड़ जितना भी दु:ख होता है तो वो राई जितना भी विचलित नहीं होता, अर्थात् दु:ख सहने का सामर्थ्य। यहाँ यह नहीं लिखा कि दु:ख आता ही नहीं है। एक तो परमेश्वर का लाभ है मुक्ति का मिलना, वो तो बड़ा लाभ है, वो तो योगियों की बात है। लेकिन एक सामान्य व्यक्ति संध्या क्यों करे? उसे कौन-सी आज मुक्ति मिलने वाली है, जो संध्या करे? उसे कौन-सा आज परमेश्वर के दर्शन होने वाले हैं कि आज ही संध्या करे। आज क्या लाभ मिलने वाला है उसको? वो कहता है आज सबसे बड़ा लाभ ये मिलने वाला है कि आज जो मुसीबत आने वाली है, उस मुसीबत का सामना करने की ताकत, हिम्मत, शक्ति मुझे संध्या से मिलती है।

मनुष्य का जन्म होता है, मनुष्य समाज में रहता है। मनुष्य जिन लोगों के साथ रहता है वो दु:ख न भी दें तो दूसरा दे सकता है। परिस्थिति दु:ख की हो सकती है। दु:ख तो आएगा ही। दु:ख आएगा तो बचने का उपाय आपको करना है, उपाय आपको मिलेगा और उस दु:ख को सहने का सामर्थ्य आएगा। किसी जगह एक वाक्य लिखा हुआ था-भगवान् मैं तुझसे यह नहीं माँगता कि तू मुझे दु:ख मत दे, लेकिन मैं यह कहता हूँ कि जो भी तू दे, उसको ग्रहण करने की हिम्मत मेरे पास होनी चाहिए, उसका साहस मेरे पास होना चाहिए, उसका सामर्थ्य मेरे पास होना चाहिए। यदि तू मुझे उतना सामर्थ्य देगा तो मुझे सहन करने में कोई कष्ट नहीं है। इसलिये संध्या करने का सबसे बड़ा लाभ है कि हमारे अन्दर दु:खों को सहने का सामर्थ्य आता है। कैसे आता है भला दु:खों को सहने का सामर्थ्य? किसी के पास पैसे की कमी है, लेकिन यदि किसी से सहायता मिलने की संभावना है तो उसका दु:ख मिट जाता है। किसी के पास बल की कमी है, पीछे से कोई दो-चार लोग साथ खड़े हो जायेंगे तो उसको बल मिल जाता है। किसी के पास ज्ञान की कमी है तो दो-चार साधु, अच्छे विद्वान् मिल जायें तो उसका कष्ट मिट जाता है। उसी तरह से जब कोई संसार का दु:ख आता है और हमें यह लगता है कि परमेश्वर हमारे साथ है, परमेश्वर हमारा सहायक है, तब हमें दु:ख नहीं होता, ये नियम है।

अर्थात् सहायता मनुष्य चाहता है, मनुष्यों की चाहता है, पर मनुष्यों की सामर्थ्य सीमित होती है। वे कह देते हैं-भाई, मैं तो इतना ही कर सकता था, इतने से आगे मेरे बस की बात नहीं है, तू किसी और को देख ले। लेकिन जब आप परमेश्वर की सेवा में जाते हैं, तो परमेश्वर की सीमा नहीं है-सहायता की भी और सामर्थ्य की भी। प्रतिदिन संध्या करने से हमारे अन्दर वो सामर्थ्य आता है, वो बल आता है कि कोई भी परिस्थिति सामने पड़ने पर हम उससे विचलित नहीं होते, उससे दु:खी नहीं होते, उससे तनाव में नहीं आते। संध्या करने से हमारा तनाव मिट जाता है। तनाव मिटने से हम स्वाभाविक रूप से स्वस्थ होते हैं मानसिक दृष्टि से भी और शारीरिक रूप से भी। सामान्य रूप से हम शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ लगते हैं, क्योंकि हम कभी-कभी परिश्रम करते हैं तो हमको कभी दु:ख होता है, कभी-कभी कष्ट होता है, कभी ज्वर होता है। लेकिन मानसिक दृष्टि से हम कितने दु:खी और सुखी हैं ये तो हमारे समय पर निर्भर होता है। हम हर समय तनाव में रह सकते हैं। लड़ते-झगड़ते सोये थे और लड़ते -झगड़ते उठ गए तो तनाव २४ घंटे बना रहा। इसे कितने दिन झेलोगे? क्या आपके तन्तु इतने मजबूत हैं कि उस तनाव को लगातार सह सकते हैं? इसके लिए यदि हम संध्या करते हैं, कृतज्ञता प्रकट करते हैं, परमेश्वर के प्रति समर्पण करते हैं, तो फिर हमें दु:ख नहीं होता।

हम सोचते हैं कि यह नहीं होना चाहिए और फिर वह होता है तो हमें सहन नहीं होता। लेकिन यदि आप चिन्तन करेंगे, संध्या करेंगे तो आप ये समझेंगे कि मेरा सामर्थ्य कहाँ तक है, मैं किस चीज़ को कितना रोक सकता हूँ। उसके बाद भी हो तो ईश्वर की इच्छा। उसके बाद मैं कुछ नहीं कर सकता। जब हम ईश्वर पर छोड़ देते हैं तो चिन्ता से मुक्त हो जाते हैं।

किसी भी दु:ख के बारे में यदि आप ये सोच लें कि ये आ ही गया तो क्या? हो गया तो क्या? ये घाटा हो जाएगा-यह डर सताता है। आप यह सोच लें कि यदि हो गया तो हो गया। आगे ईश्वर जाने, उसकी इच्छा। ये मेरा सामार्थ्य है, मैंने इतना किया, आगे तू जाने-तेरा काम जाने। जैसा तू रखेगा, जैसा तू बनाएगा वैसा हम मानने को तैयार हैं। यह संध्या की सबसे बड़ी उपलब्धि होती है।

अब रही संध्या कैसे करें? संध्या करने के लिए सामान्य नियम ये है कि यम-नियमों का पालन करते रहें, कम हो या ज्यादा। सारा तो हो नहीं सकता। लेकिन जितना होगा, उतना ही लाभदायक होगा। कितना हो सकता है, अब यह चिंतन करने पर निर्भर है। किसी परिस्थिति में कोई काम जितना अच्छा हो सकता है, उतना अच्छा करना और विशेष कुछ भी करने की बात नहीं है। यदि हम प्रतिदिन बैठते हैं और बैठकर यह सोचते हैं कि आज दिन में क्या किया? कई बार लोग मुझसे पूछते हैं, जी मन को एकाग्र करने का क्या तरीका है तो मैं कहता हूँ, देखो, सबसे आसान तरीका तो यह है कि जब कभी अवसर मिले, चाहे दिन में, चाहे रात में, चाहे यात्रा में, चाहे भोजन के बाद, चाहे कभी भी, जब आपको समय मिले आप एक चीज का अभ्यास करें कि आप यह सोचें कि अभी पीछे मैंने क्या किया, आज क्या किया, कल क्या किया, उससे पहले क्या किया, अभी पिछले क्षण क्या किया, पिछले घंटे में क्या किया तो थोड़े दिन में आपको एक आदत हो जाएगी कि मन ये पूछेगा कि अब क्या करूँ। अभी तो उसको अपने आप चलने की आदत है ना, आपको पीछे चलाता है, आप उसको थोड़ा-थोड़ा करके केवल यह अभ्यास डालें। इसीलिए हमारे ऋषि लोग एक बात कहते हैं कि सायंकाल जब हम सोएं तो एक चिंतन सबसे ज्यादा करें- जैसे एक व्यक्ति, एक व्यापारी दिन-भर के काम को रात के समय जाँचकर सोता है, हानि-लाभ देखकर सोता है, वैसे ही यदि कोई मनुष्य प्रात:काल से सायंकाल की अपनी दिनचर्या पर विचार करके सोता है तो मेरा अनुभव यह है कि वह पूरा विचार तो कर ही नहीं पाता, जैसे ही उसकी यह प्रवृत्ति बनेगी, वो विचार की ओर बढ़ेगा और सो जाएगा। बाकी विचार तो उसके सोने के बाद मन करता रहेगा, क्योंकि मन तो कभी सोता नहीं है। सोती तो इन्द्रियाँ हैं। वो भी स्थूल। इस दृष्टि से मन को एकाग्र करने का सबसे अच्छा उपाय होता है कि आपने जो किया है, उसका चिंतन करें, उस पर विचार करें। उससे दो लाभ होते हैं-एक लाभ होता है कि जो विचार में आ गई वो गलती दोबारा नहीं हो सकती। गलती तभी

होती है जब सोची हुई न हो। न सोचने के कारण भूल होती है। यदि सोचा हुआ है और आगे से भी ज्यादा सोचा होगा तो आप दूर तक की सोच सकते हैं कि आगे क्या-क्या गलतियाँ संभव हैं और समझदार आदमी वो होता है, जो आगे आने वाली गलती के पहले कल्पना करता है और उसका उपाय करता है।

हमारे यहाँ वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर में महात्मा हरप्रकाश जी होते थे, उनकी बड़ी दूरदृष्टि थी। आश्रम का एक हिस्सा सड़क के उस पार बना, आश्रम का एक हिस्सा सड़क के इस पार पहले से था। यदि आप ज्वालापुर वानप्रस्थ आश्रम गए हों तो आप जानते होंगे। बोले जी नल लगेगा तो पानी इस सड़क से वहाँ जाएगा, इसलिये उन्होंने सड़क खुदवा दी, सड़क खुदवा दी तो उन्होंने नल डालने वाले से कहा कि दो पाइप डालो। उसने दो पाइप डाले, बड़े डाले, और सड़क को बन्द कर दिया। कभी साल-छः महीने बाद बगीचे के पानी के लिए जरूरत पड़ी दूसरा पाइप डालने की। बोले, जी सड़क खोदें? महात्मा जी ने कहा- खोदने की जरूरत नहीं, दूसरा पाइप इसमें पड़ा हुआ है। अर्थात् व्यक्ति जब चिंतन, विचार करता है तो भविष्य की संभावनायें उसके सामने आ जाती हैं और उन संभावनाओं का उपाय वो सोच लेता है। ये संध्या करने का बहुत बड़ा लाभ होता है। उसको ये पता लगने लगता है कि अब क्या करना चाहिए और क्या गडबड़ हो सकती है। इस दृष्टि से जो शान्तचित्त व्यक्ति होता है उसके अन्दर ये विचार पैदा होते हैं।

अब रही बात मौलिक रूप से संध्या करने की जो कि बैठकर की जाती है। कई बार लोग कहते हैं, अजी मनुष्य की सेवा करना ही संध्या करना है। देशभक्ति करना संध्या करना है, मनुष्य सेवा ही ईश्वर सेवा है। ये सब व्यर्थ की बातें हैं। यह ऐसा ही है कि भोजन करना राष्ट्र सेवा करना है या राष्ट्र सेवा करना ही भोजन करना है, ऐसा हो सकता है क्या? सेवा-सेवा की जगह है, भोजन-भोजन की जगह है। वैसे ही संध्या का कोई विकल्प नहीं है। आप सोचें कि वहाँ घूम आए तो संध्या हो गई, उसकी सेवा कर दी तो संध्या हो गई, माता-पिता के पैर दबा दिए तो संध्या हो गई। संध्या से जो काम होता है वो है माता-पिता की सेवा करने का भाव का पैदा होना। वो संध्या का विकल्प नहीं होता कि दुकान पर ईमानदारी से बैठ गए तो संध्या हो गई। संध्या करने से ईमानदारी से बैठा जा सकता है। ईमानदारी कर देना मात्र संध्या कर लेना नहीं है। संध्या कर लेना परमेश्वर से सीधा सम्बन्ध बनाना है और सीधा सम्बन्ध चीजों से नहीं बनता, मतलब किसी को भोजन करा देने से परमेश्वर से सम्बन्ध नहीं बनता। दुकान पर ग्राहक के साथ ईमानदारी करने से परमेश्वर से सम्बन्ध नहीं बन रहा है। परमेश्वर को मान के आप काम कर रहे हो, उसकी आज्ञा मानकर कर रहे हो, ये तो ठीक है। माता-पिता ने कहा बेटा दुकान पर ईमानदारी से रहना, आप ईमानदारी से रह रहे हो, ये ठीक है, लेकिन वो माता-पिता की सेवा नहीं हो रही है। माता-पिता की सेवा तो बीमार पड़े हैं तो पानी देने से ही होगी, दवा देने से ही होगी, भोजन कराने से ही होगी। वैसे ही परमेश्वर का जो सत्संग है, वो संध्या करने से ही होगा किसी और उपाय से नहीं होगा।

संध्या करनी चाहिए और नियम से कम से कम दो बार करनी चाहिए। जब संध्या करने के लिए बैठें तो फिर संध्या ही करनी है और कुछ नहीं। ध्यान जिसका करना हो उसका ही होना चाहिए। एक सज्जन मेरे से कहने लगे, संध्या के समय ऐसा लगता है, डायरी ले के बैठो। इतने काम याद आते हैं कि सब उसी समय लिख लें तो ठीक है। ऐसा क्यों होता है? क्योंकि शान्त आप तभी बैठते हैं। शान्त बैठते ही पुरानी समस्याएं आपके मस्तिष्क में आने लगती हैं। दिन भर के काम जो आप भूल गए थे वो याद आने लगते हैं। स्वाभाविक है। लेकिन ये काम करने के लिए आप नहीं बैठे हो। यहाँ तो ध्यान करने के लिए बैठे हो तो उसका ध्यान ही करो। प्रारम्भ में हम इसको बोलकर करते हैं, गाकर करते हैं। मतलब ईश्वर-भक्ति के जो भजन हम गाते हैं वो इसलिए गाते हैं कि हम मौन रहकर के उतना चिंतन नहीं कर सकते हैं। हमारा ध्यान एकाग्र नहीं होता है। इसलिए हम उस तरह की कोई पुस्तक पढ़ते हैं या उस तरह के गीत गाते हैं या उस तरह की बात करते हैं या उस तरह का प्रवचन सुनते हैं।

लेकिन मूल चीज क्या है? यम-नियम के बाद पहली

चीज आती है- आसन। मतलब संध्या की मूल चीज है- आसन। आसन का मतलब होता है आराम में बैठना, जिसमें कमर ठीक हो, गर्दन ठीक हो, पैर ठीक हों, अर्थात् कष्ट न हो, क्योंकि कोई चीज यदि आपको कष्ट देगी, तो आप अगला काम नहीं कर सकोगे। आपको बैठने से पैरों में दर्द हो जाएगा तो ध्यान कैसे होगा। कमर में दर्द होगा तो ध्यान कैसे होगा। ध्यान होने के लिए जो सहज परिस्थिति है वह पैदा होनी चाहिए, इसलिए कहते हैं कि आसन यदि सिद्ध हो जाए तो आगे के काम अनायास सिद्ध हो जाते हैं। संध्या तो बहुत बाद की चीज है, मूल चीज है आसन। इतने समय तक हम दो काम करेंगे-एक तो आसन नहीं बदलेंगे और आँख नहीं खोलेंगे। जरा करके देख लो। आँख बन्द करके बैठे हो और खट्.... होते ही ऐसा लगता है, देखें क्या हुआ? कहीं कोई आदमी घर में तो नहीं घुस आया। ये जो अभ्यास है, ये संध्या नहीं होने देता। संध्या करने के लिए, बैठ सकना, एकदम उठने की इच्छा न हो। आधा घन्टा बैठना है, तो आधा घन्टा एक आसन से हम बैठ सकें बिना हिले-डुले। दूसरी चीज है कि आधा घन्टा आँख बन्द रह सकें। ये बड़ी मुख्य बात है। यह तभी रह सकती है, जब आपकी उसमें रुचि पैदा हो। इसके लिए मनु ने एक बहुत सुन्दर श्लोक लिखा है- वो ये कहते हैं-**स्वाध्यायात् योगमासीत योगात् स्वाध्यायमामनेत्, स्वाध्याय योग सम्पत्या, परमात्मा प्रकाशते** खाली एक चीज से काम नहीं चलता। उसको जानना पड़ता है, जानने के बाद करना पड़ता है। जानना और करना जब दोनों साथ-साथ चलते हैं तो चीज परिणाम तक पहुँचती है। आप आर्यसमाजी लोग मूर्ति-पूजा से तो छुड़ा देते हो पर करना क्या है, यह नहीं बताते। आदमी इधर का भी नहीं रहता और उधर का भी नहीं रहता। इसलिए संध्या करने के लिए संध्या किसकी कर रहे हैं, उसको जाने बिना आप संध्या कैसे करोगे?

अब जानना दो तरीके से होता है। एक जानना तो यह होता है कि हम जाकर उससे मिलें और एक जानना होता है कि हम उसके बारे में सुनें या पढ़ें। अगर आप कहोगे कि मुझे ईश्वर दिखा दो। यह काम तो संभव नहीं है। न तो कोई उसे दिखा सकता है न कोई आँखों से देख सकता है। तो फिर क्या करना है-मैंने आपको पहले भी बताया हुआ है कि किसी भी चीज को जानने के दो तरीके होते हैं-एक तो उसका शाब्दिक ज्ञान, बौद्धिक ज्ञान। हम तर्क से, प्रमाण से, युक्ति से, उदाहरण से, दृष्टान्त से किसी चीज को समझाते हैं और दूसरा उसको देखना, प्रत्यक्ष करना, उसका साक्षात् करके ज्ञान प्राप्त करना। परमेश्वर का साक्षात् मनुष्य खुद करता है, उसे कोई दूसरा नहीं करा सकता। कोई कितना भी महान् हो, करना तो खुद ही पड़ता है। रही बात बुद्धि से जानना, वो दूसरा करा सकता है। जिसके लिए वेद पढ़ते हैं, जिसके लिए सब काम करते हैं, वो दूसरा आपको बता सकता है। पहली चीज है संध्या में यह पता होना चाहिए कि जिसका हम ध्यान कर रहे हैं, वो कौन है? वो कैसा है? वो कहाँ है? उसका हमारा सम्बन्ध क्या है? ये चीजें पहले मालूम होनी चाहियें और वास्तव में आप जो मन्त्र पढ़ते हो वो और कुछ भी नहीं है, उसके हमारे सम्बन्धों की जानकारी है। हमारे सत्यपति महाराज जब बच्चों से मिलते हैं उनसे परमेश्वर के बारे में बात करते हैं तो कहते हैं कि पहली बात बताओ परमेश्वर का नाम क्या है? आर्यसमाजी होने के नाते हम सब जानते हैं परमेश्वर का मुख्य निज नाम 'ओ३म्' है। परमेश्वर का हमारा सम्बन्ध क्या है? वो हमारा क्या लगता है? वो हमारा पिता है और हम उसकी सन्तान हैं। वो हमारा राजा, हम उसकी प्रजा हैं। वो हमारा न्यायाधीश है। हम उसके अपराधी/ अनअपराधी जो भी कुछ हैं और वो हमारा आचार्य है, गुरू है, हम उसके शिष्य हैं। ये सब सम्बन्ध हमारे और उसके हैं। जब संध्या करते हैं, तो उसके बारे में और अपने बारे में हम विचार करते हैं। इन सम्बन्धों पर जो विचार करना है, वो संध्या करना है। इन सम्बन्धों पर जब हम विचार करेंगे तो हमें यह समझ में आएगा कि हमें क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। वो हमसे क्या अपेक्षा रखता है और क्या हम उससे अपेक्षा रखते हैं? जरूरी होता है संध्या करने के लिए परमेश्वर का जानना और परमेश्वर को जानने के लिए बैठना। बैठने पर आप देखोगे कि मन्दिरों में, मस्जिदों में, उठते हैं, कूदते हैं, फाँदते हैं, इनसे संध्या हो जाती है क्या? इसके लिए वेदान्त दर्शन में दो-चार सूत्र आए हैं, बड़े अच्छे हैं। वो कहता है कि भई ''आसीनः संभवात्''।

शेष भाग अगले अंक में.....

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग–साधना शिविर

दिनांक : १८ से २५ जून, २०१७

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान-विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों-बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग-साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक-दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।

२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।

३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य-सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।

४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।

५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि-उद्यान परिसर में ही की जायेगी।

६. बाह्य-वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे- समाचार-पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखने आदि पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।

७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा- खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।

९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय-कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।

१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन-सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।

११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ-मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता-बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्-पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है।

ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं, शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेलवे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

email:psabhaa@gmail.com

-संयोजक

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को स्थान दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित हों**। अतः सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं। अतः** लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, **जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हों।** परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छः माह या अधिक समय भी लग सकता है, अतः कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें।

-संपादक

कुछ तड़प-कुछ झड़प

प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

कर्नाटक से एक ऐतिहासिक निमन्त्रण- यह वर्ष स्वामी श्रद्धानन्द संन्यास-दीक्षा शताब्दी वर्ष है। परोपकारिणी सभा तथा हमारे कुछ परमोत्साही कर्मठ आर्य युवक इस शताब्दी वर्ष के महत्त्व को जानते-मानते हुये इसे ऐसे ढंग से मनाने में लगे हैं, जिससे हमारे प्रयास व आयोजन ऋषि मिशन के इतिहास में स्मरणीय रहें। मार्च में इसी उपलक्ष्य में इस लेखक ने ३-४ व्याख्यान दिये। फिर भरतपुर में एक बड़ा यज्ञ तथा स्नेह सम्मेलन किया गया। इस जातिवाद के घृणित वातावरण में ऊँच-नीच उन्मूलन के स्वामी श्रद्धानन्द जी के आदेशानुसार इस अनूठे कार्यक्रम द्वारा सभा ने एक पवित्र सन्देश दिया। परतवाड़ा आदि स्थानों पर हमारे आर्यवीर एक के पश्चात् एक स्मरणीय शिविरों का आयोजन कर रहे हैं।

१. स्वामीजी का अब तक का सबसे बड़ा और सर्वाधिक खोजपूर्ण जीवन-चरित्र लिखा जा रहा है। इसमें अनेक दस्तावेज़ों के छायाचित्र होंगे। अमरीका तक इसकी सुगन्धि पहुँच चुकी है। इसके प्रकाशन में वहाँ से भी गौरवपूर्ण सहयोग मिलेगा। ३५० से ऊपर पृष्ठ लिखे जा चुके हैं।

२. सभा एक यात्रा भी निकालेगी। यात्री-संख्या सीमित होगी, परन्तु इसके परिणाम व प्रभाव दूरगामी होंगे। यह यात्रा हैदराबाद तथा कर्नाटक भी जायेगी। कर्नाटक से आज प्रातः ही विश्व के १२० वर्षीय ज्ञानवृद्ध वैदिक विद्वान् पूज्य पं. सुधाकर जी की पौत्री ने चलभाष पर पण्डित जी का आदेश सन्देश सुनाया कि उनके निवास पर पण्डित जी के साथ कुछ दिन रहना होगा।

३. इस समय हमारे मध्य यही एकमेव विभूति है, जिसने स्वामी श्रद्धानन्द जी, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी की छत्रछाया में समाज सेवा के पाठ पढ़े थे। आपका कभी ब्यावर समाज में भी सम्मान हुआ था। मान्य धर्मवीर जी के साथ श्री ओमप्रकाश जी झँवर ने कई वर्ष पूर्व बैंगलूर जाकर ब्यावर समाज की ओर से उनका भव्य अभिनन्दन किया था। अब से कुछ वर्ष पूर्व धर्मवीर जी ने इस सेवक को कहा कि आप पण्डित जी को ऋषि मेला पर लायें। विमान से लाने की व्यवस्था कर देंगे। उनका सम्मान करना था। पूज्य पण्डित जी ने स्वीकृति नहीं दी थी। अब सभा की ओर से हम वहाँ जाकर कुछ करेंगे। पाठकों को उसकी जानकारी दी जायेगी।

उनकी पौत्री कुछ समय के लिये अबोहर आयेगी। सभा के एक युवा सेवक ने ऋषि मेला पर उनका एक संक्षिप्त जीवन चरित्र वितरित करवाने का मन बनाया है। उनकी चाहना पूरी करते हुये इसी यात्रा में इसका लेखन कार्य करने का भरपूर प्रयास होगा। जिन प्राणवीरों ने स्वामी श्रद्धानन्द जी से प्रेरणा प्राप्तकर देश धर्म रक्षा में प्राण दिये, जीवित जलाये गये-हम वहाँ-वहाँ भी जाने का कार्यक्रम सोच चुके हैं। जहाँ दक्षिण के गैरीबाल्डी पं. नरेन्द्र को पिंजरे में बन्दी बनाकर कालेपानी में रखा गया-'हम वहाँ मनानूर भी जायेंगे। हुपला, बीदर, बैंगलूर, कल्याणी, घोड़ेवाड़ी, हुमनाबाद भी जाना है। जो जीवित जलाये गये उनको वहीं जाकर श्रद्धाञ्जलि देंगे।

४. इस वर्ष देवनगर (चामधेड़ा ग्राम का अब नाम बदल गया है) हरियाणा में शताब्दी वर्ष पर भव्य श्रद्धानन्द पुस्तकालय का उद्‌घाटन होगा। जो दस्तावेज़ दिल्ली, जालन्धर, नागपुर, प्रयाग, लखनऊ में नहीं- वे वहाँ पर मिलेंगे। क्या यह शताब्दी वर्ष पर एक स्मरणीय स्मारक नहीं होगा?

५. हैदराबाद सभा ने भी एक कार्य सौंपा है। उनका आदेश सिर माथे पर। राहुल जी हमारे साथ होंगे। सभा का कार्य भी शताब्दी वर्ष पर करणीय व स्मरणीय है। उसे सिरे चढ़ाना हमारा कर्त्तव्य बनता है।

रक्तसाक्षी पं. लेखराम ग्रन्थ- इसी शताब्दी वर्ष पर परोपकारिणी सभा बड़े-बड़े सम्मेलन तो कोई कर या करवा नहीं सकी यह ठीक है, परन्तु सभा के निष्ठावान् प्रेमियों ने एक के पश्चात् दूसरा स्मरणीय ग्रन्थ प्रकाशित करके तो दिखा दिया है। सभा ने 'वैदिक इस्लाम' जैसी मौलिक पुस्तक इस वर्ष निकाली तो आर्यवीरों ने देश-

विदेश में, नैट पर आर्य धर्म और पं. लेखराम जी के विरुद्ध विषवमन का तर्कसंगत, प्रमाणों से परिपूर्ण अब तक का इस विषय का सबसे बड़ा ग्रन्थ प्रकाशित कर दिखाया है। इसमें प्रथम बार पं. लेखराम जी का बलिदान के समय लिया गया ग्रुप फोटो प्रकाशित कर दिया गया है।

इसमें कौन-कौन हैं? यह बता सकने वाले हमारे पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी, महात्मा आनन्द स्वामी जी चल बसे। स्वामी सर्वानन्द जी ने कुछ नाम बताये थे, परन्तु मैं भूल गया। पूज्य आनन्द स्वामी जी जब-जब मिले वह चित्र अपने साथ नहीं होता था। सम्भव है लाहौर के एक पुराने ९० वर्षीय कृपालु दो-तीन के नाम बता सकें। उन्हें भी मिलेंगे। इस शताब्दी वर्ष की इस उपलब्धि पर हमें सन्तोष व गौरव है। इसमें भी दुर्लभ अप्राप्य साहित्य के, प्रमाणों के छायाचित्र हमने दिये हैं।

हैदराबाद का प्रथम मुक्तिदाता कौन?- किसी ने हैदराबाद राज्य के भारत में विलय तथा मुक्ति संग्राम पर हम से कई प्रश्न पूछे। हमारे ऐसे प्रेमी युवक यह भूल करते हैं कि वे लिखकर अथवा आमने-सामने बैठकर हमें सेवा का अवसर नहीं देते। चलभाष पर सब पीएच.डी. करना चाहते हैं। हमने श्री लोखण्डे जी को कहा था कि आप हैदराबाद के वैदिक धर्म प्रेमी आर्य सेवक मौलाना हैदर शरीफ़ पर कुछ खोज करके लिखें। उनसे कुछ बन न सका। हमने उनका एक दुर्लभ चित्र खोज निकाला है। हैदराबाद के आर्यों को भी अब उनके विषय में कुछ ज्ञान नहीं।

मुक्ति-संग्राम पर कई सज्जन लिखते-बोलते तो रहते हैं, परन्तु हो क्या रहा है? कुछ प्राप्य सामग्री व पुस्तकों को देखकर घटनाओं को आगे-पीछे करके एक पुस्तक बना दी जाती है। इत्तहाद-उल-मुसलमीन का विषैला साहित्य, उनके उर्दू पत्रों को किसने खंगाला? 'ज़वाले हैदराबाद' पुस्तक किसने पढ़ी? प्रधानमन्त्री, विदेश मन्त्री, गृहमन्त्री को भी इस विषैली पुस्तक के दर्शन नहीं हुये। मौलाना औवैसी इसी कारण तो भड़कीले भाषण देता रहता है।

जब हैदराबाद के मुक्ति संग्राम पर हमसे प्रश्न पूछे गये तो हमारा उनसे उल्टा प्रश्न था कि १. हैदराबाद के निज़ाम से टक्कर लाने का विचार सर्वप्रथम किसके मस्तिष्क में आया? २. हैदराबाद मुक्ति संग्राम का पहला अभियुक्त अथवा सेनानी कौन था?

इन प्रश्नों को सुनकर वह बन्धु दंग रह गया। हमने कहा, इतिहास में रस लेना, इतिहास के विषय लेकर नये-नये लेख लिखना और बात है, इतिहास का बोध होना और इतिहास का चिन्तन एक दूसरी बात है। उस बन्धु को कहा, मुक्ति-संग्राम की पृष्ठभूमि या भूमिका (सरदार पटेल के अनुसार) आर्यों ने बहुत पहले तैयार करने का कार्य आरम्भ कर दिया था। इस संग्राम के **प्रथम सेनानी हमारे पूज्य स्वामी नित्यानन्द जी महाराज** (राजस्थान में जन्मे) थे। उस भाई ने इसके प्रमाण माँगे। कहाँ लिखा है? यह प्रश्न करना तो बड़ा ही सरल है, परन्तु श्रम करना अति कठिन है। हमने पूज्य मीमांसक जी, आचार्य प्रवर उदयवीर जी से यही कुछ तो सीखा। हमने उस प्रेमी सज्जन से कहा कि 'रक्तसाक्षी पं. लेखराम' ग्रन्थ के नये संस्करण को ध्यानपूर्वक पढ़िये। सप्रमाण उत्तर उसमें मिल जायेगा।

तब कौन बोला- युग कितना बदल गया। सिन्ध में सत्यार्थप्रकाश पर जब मुस्लिम लीग ने वार किया तब आर्यसमाज ने आन्दोलन छेड़ा। देशरत्न डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी की अध्यक्षता में आर्य महासम्मेलन करके आर्यों ने सत्यार्थ प्रकाश रक्षा के यज्ञ को अखण्ड प्रचण्ड किया। वीर सावरकर ने हुंकार सुनाई, ''हिन्दू जाति की रगों में गर्म रक्त का संचार करने वाला यह ग्रन्थ अमर रहेगा।'' सनातन-धर्मी नेता बोले। बाबू पुरुषोत्तमदास टण्डन, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, सरदार पटेल बोले और जब दिल्ली में सत्यार्थप्रकाश पर मुसलमानों ने केस कर दिया। सब लीडरों ने मुँह में दही जमा ली। हिन्दू नेता कहलाने का, हिन्दू संगठन की रट लगाने का जिन्हें अभ्यास है- वे भी चुप्पी साधे रहे। गुजरात से लेकर राजस्थान और पंजाब से लेकर बंगाल, कन्याकुमारी तक किसी लीडर का मौनव्रत न टूटा। ऐसा क्यों? संस्थाओं व अपनी सम्पत्ति के लिये सरकार की शरण में रहने वाले निस्तेज समाजी लीडरों की सत्ताधारियों को क्या चिन्ता! वे अपने-अपने वोट बैंक की चिन्ता करेंगे। आपको वे क्या जानें?

इतिहास प्रदूषण- इतिहास-बोध हिन्दुओं को नहीं, इतिहास-प्रदूषण गोरों से इन्होंने सीख लिया। परोपकारिणी

सभा में घुसपैठ करके एक प्रदूषणकार ने लिख दिया कि **रायबहादुर मूलराज पर महर्षि का अत्यधिक विश्वास था।** सभा के संचालकों और आर्यसमाजियों को इस घृणित पाप का पता ही न चला। ऋषि का पत्र-व्यवहार पढ़िये। महर्षि गोकरुणानिधि के अंग्रेजी अनुवाद का अनुरोध करते रह गये। बहुत देर के पश्चात् ऋषि को उस छलिये की वास्तविकता का पता चला। कुछ लोग राजनीति में रस लेते हुए यह कह रहे थे, जनसंघ के संस्थापक डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने यह कहा। यह किया।

हमने कहा, वह तो जनसंघ के संस्थापक नहीं थे। तो फिर जनसंघ का संस्थापक कौन था? वे चौंक कर बोले। उन्हें बड़ी विनम्रता से बताया गया कि जनसंघ के संस्थापक प्रधान तो लॉर्ड हार्डिंग बम केस के अभियुक्त लाला बलराज जी थे। जालन्धर के डी.ए.वी. कॉलेज परिसर में पहले केवल पंजाब में जनसंघ स्थापित हुआ था। बहुत तथ्य बताया। अपना निजी अनुभव बताया। तत्कालीन दैनिक पत्रों के कार्यालयों में जालन्धर चलकर इसकी पुष्टि करने के लिये कहा। भाजपा वाले लाला बलराज का नाम क्यों नहीं लेते? उस सज्जन ने पूछा। यह वे जानें। हमने उत्तर दिया, यही तो हिन्दुओं का दोष, दुर्बलता है। इतिहास बोध है ही नहीं। प्रेरणा के स्रोत बन्द रखते हैं।

अन्धविश्वासों की लहलहाती खेती:- नदियों में नाव डूबने से, पर्वतों में, खड्डों में बसें गिरने, धार्मिक स्थलों पर दर्शन करके आते-जाते दुर्घटनाओं में मरने वाले हिन्दू तीर्थयात्रियों की संख्या बढ़ती जा रही है। ये सब कुछ पढ़कर कलेजा फटता है। हिन्दू लीडर उनके शोक में चार अश्रु नहीं टपकाते। कुछ सोचते नहीं। ईश्वर की सर्वव्यापकता की, एकेश्वरवाद की चर्चा कौन करता है? धर्म का आदि स्रोत, आस्तिकता, अस्तिकवाद, Real Hinduism, डॉ. राधाकृष्णन के साहित्य का प्रचार होता तो लोग अन्धविश्वास में भटकते हुये ऐसे न मरते रहते। आर्यसमाज के दूसरे नियम की घुट्टी पिलाने तथा 'एक ओंकार' के जप की, कीर्तन की लहर चलाने से ही यह दु:खद अवस्था बदलेगी।

श्री निरञ्जनदेव तीर्थ शंकराचार्य ने कल्याण में लेख लिखकर यह दुष्प्रचार किया कि 'ओ३म्' केवल है, केवल ही कर देगा अत: इसका जप मत करो। राम-राम जपा करो। उसके इस दुष्प्रचार से अन्धविश्वास फूला-फला और वातावरण विषाक्त हुआ। उनकी पंजाब यात्रा में एक रेलवे स्टेशन पर गाड़ी की प्रतीक्षा में अपने आसन सिंहासन लिये सेवकों से घिरे उन महाराज के समीप हमने ऊँची आवाज़ में ओ३म् का जप आरम्भ कर दिया। वह हमें रोक-टोक भी न सका। ओ३म् का नाद करते-करते हमें आनन्द आ रहा था। उसे हमारे जप से, नाद से कितना पाप लगा? यह उसने किसी लेख व भाषण में कभी न बताया। वह महिलाओं के वेद-मन्त्र बोलने, वेद पढ़ने-पढ़ाने का घोर विरोधी था।

वर्तमान की केन्द्र सरकार और योगी जी की उ.प्र. सरकार अन्धविश्वास को चुनौती देते हुये आर्ष कन्या गुरुकुलों को प्रोत्साहित करके भेदभाव व अन्धविश्वास को ध्वस्त करने को आगे आये तो देश में नवयुग आ जाये। जब यमुना तट पर श्री **रविशंकर ने वेद पाठ करवाया तब सब वेद पाठी जन्म से ब्राह्मण थे। उनमें एक भी महिला वेद पाठी नहीं थी और न ही ब्राह्मणेतर कुल में जन्मा कोई ब्रह्मचारी था।** इस पर तब कोई बोला ही नहीं। राजनेताओं की सोच भी नहीं बदली। हिन्दुओं की पाचन-शक्ति बढ़ाने के लिये जातिवाद मिटाना होगा। लाल डोरा बाँधकर, तिलक लगाकर जाति नीरोग न होगी। सैंकड़ों युवा मिशनरी धर्म-रक्षा, जाति-रक्षा के लिये देश भर में 'ओ३म्' के जप की, वेद-अधिकार की लहर को चलायें। जानबूझकर 'राम-राम' जप को यज्ञ की संज्ञा देकर एकेश्वरवाद और 'ओ३म्' के जप का प्रतिकार किया जा रहा है।

क्या उत्तर दें- एक भाई ने मासिक 'वेदप्रकाश' में प्रकाशित एक लेख में इस्लाम की मान्यताओं में आदम तथा हव्वा की बाइबिल से कहानी उद्धृत करने पर एक प्रश्न पूछा है कि इस्लाम को जब बाइबिल की यह कथा व विचार मान्य नहीं हैं तो फिर इसको इस्लाम के विवेचन में प्रस्तुत करने का क्या औचित्य है? प्रश्नकर्त्ता ने इस सम्बन्ध में मुरादाबाद में ऋषि जी की उपस्थिति में पादरी पार्कर तथा मौलवी इमदादअली के विवाद का श्रद्धेय लक्ष्मण जी वाले ऋषि जीवन के पहले भाग के पृष्ठ ४६७ पर

प्रमाण भी दिया है। प्रश्नकर्त्ता यह प्रश्न हमसे न पूछकर उक्त पत्र के सम्पादक जी से अथवा लेख के लेखक श्रीयुत् विवेक से ही पूछें तो ठीक रहेगा। प्रश्न तो अच्छा है। यदि उनके समाधान से सन्तुष्टि न होगी तो फिर हम इस पर सविस्तार वैदिक मान्यता के अनुसार कुछ लिखेंगे। अन्य मत पन्थों पर सोच समझकर ही उनके प्रामाणिक ग्रन्थों के आधार पर लिखने से आर्यसमाज की शोभा बनी रहेगी अन्यथा स्थिति हास्यास्पद होगी। भ्रामक सन्देश जाने से आर्यसमाज का गौरव घटता रहेगा।

केरल में वैदिक धर्म प्रचार- श्री महाशय धर्मपाल जी की दानशीलता से कालीकट में वैदिक धर्म प्रचार के शुभ कार्य की चर्चा करते हुये पहले श्री विनय जी ने यह कहा कि केरल में प्रथम बार वैदिक रिसर्च... की स्थापना हुई है। हमने भी सुना और सुनकर चुप रहे। अब आर्य सन्देश में चित्रों व लम्बे समाचारों, लीडरों के भाषण पर एक विहंगम दृष्टि डालकर कुछ निवेदन करना आवश्यक जाना।

जिस रिसर्च फाउंडेशन का समाचार प्रसारित हो रहा है, वह तो वहाँ बहुत पहले से है, अब महाशयजी का नाम जुड़ने से उसकी शोभा और बढ़ेगी। लाहौर से जब पं. शान्तिप्रकाश जी की कोटि के पूज्य विद्वान् किसी दूरस्थ प्रदेश में प्रचारार्थ जाते थे तो श्रद्धेय स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी से मार्गदर्शन लेकर जाते थे। उस प्रदेश में कैसे प्रचार करना है? क्या-क्या कहना आवश्यक है? वहाँ के इतिहास, समाज-रचना, रीति-नीति का स्वामी जी से ज्ञान लेकर हमारे विद्वान् यथा महाशय चिरञ्जीलाल जी 'प्रेम' आदि निकलते थे।

इन गुणी नेताओं में से स्वामी सम्पूर्णानन्द जी ने वहाँ पहुँचकर इस सेवक से चलभाष पर कुछ जानकारी माँगी। उनका धन्यवाद! इस लेखक का ५५ वर्ष से केरल से जीवन्त सम्बन्ध हैं। पचास बार से भी अधिक बार वहाँ के ओर-छोर की यात्रायें की हैं। अपनी प्रथम यात्रा में प्रथम भाषण केरल के प्रथम ऋषि भक्त श्री शंकर शास्त्री का नामोल्लेख करते हुये आरम्भ किया था। वह ऋषि के काल के आर्यपुरुष थे। ऋषि जी के बलिदान पर आपनें संस्कृत श्लोकों में उन्हें श्रद्धाञ्जलि दी थी।

अपने उस व्याख्यान में स्वामी श्रद्धानन्द जी, भूमण्डल प्रचारक मेहता जैमिनि, पं. गंगाप्रसाद जी उपाध्याय, पं. धर्मदेव जी, महाशय चिरञ्जीलाल जी, पं. काहनचन्द जी, महात्मा आनन्द स्वामी जी आदि सबकी प्रचार यात्राओं की चर्चा करते हुए कई प्रेरक प्रसंग सुनाये। तपोधन स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने चार बार भारत की पैदल यात्रायें कीं। **हर बार यह मुनि महान् केरल भी गया।** हमने सद्गुरु स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी की इन चार यात्राओं के अतिरिक्त उनकी केरल को देन की चर्चा तब की। संयोग से हमारे व्याख्यान का अनुवाद उन्हीं के शिष्य लाहौर उपदेश विद्यालय के स्नातक पं. नारायणदत्त जी कर रहे थे। हमारे व्याख्यान में श्री महाशय कृष्ण जी द्वारा सुनाया गया एक प्रसंग आया तो पं. नारायण दत्त जी फड़क उठे।

हमने उस व्याख्यान में पूज्य उपाध्याय जी, स्वामी स्वतन्त्रानन्द और महाराज श्रद्धानन्द की वर्कला शिवगिरि यात्राओं की भी चर्चा छेड़ी। सर सी. शंकरण नायर के गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में दिये गये एक भाषण का भी उल्लेख था। धर्मवीर धर्मसिंह के साथ जब हमारे महामुनि श्रद्धानन्द जी वर्कला शिवगिरि पधारे तो नारायण गुरु स्वामी जी महाराज ने परिव्राट् श्रद्धानन्द का भव्य अभिनन्दन किया। केरल के दो सत्याग्रही वीरों ने पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के आशीर्वाद से हैदराबाद सत्याग्रह में भाग लिया।

मेहता जैमिनि जी के पश्चात् ८५ देशों में वेद-प्रचार का कीर्तिमान बनाने वाले डॉ. हरिश्चन्द्र हमारे सामने कई बार केरल गये। डॉ. धर्मवीर जी, स्वामी ऋतस्पति जी, स्वामी प्रणवानन्द जी की कोटि के संस्कृत वेदज्ञ कई-कई बार केरल गये। पं. मदनमोहन जी विद्यासागर, आचार्य सत्यानन्द जी वेदवागीश, पूज्य ब्रह्मदेव जी, सत्यव्रत जी, डॉ. राधाकृष्णन, महात्मा प्रेम प्रकाश, डॉ. अशोक जी आर्य, श्रीमती ज्योत्स्ना आर्य एक से अधिक बार केरल प्रचारार्थ गये। केरल दक्षिण का पहला प्रदेश है जिसकी भाषा में ऋषि का वेद भाष्य छपा है। इसरो के अध्यक्ष डॉ. नायर की अध्यक्षता में उसका विमोचन हुआ। लेखक के सिर पर गहरे घावों से १३ टांके लगाये गये फिर भी हम १२ घण्टे के भीतर केरल के लिये चल पड़े। यह कथन सत्य नहीं कि लीडरों की बाढ़ आने से केरल में वैदिक

दुंदुभि बज गई। श्री राजेश जी चमके रहे हैं। हमें इस पर गौरव है। लेखक उनके विद्यार्थी जीवन से उनसे जुड़ा हुआ है। वहाँ पं. धर्मदेव की कोटि के विद्वान् जन्में, हमारी यही कामना है। भवनों पर इतराने वालो! हमने तप त्याग की खेती करने वालों का इतिहास सुना दिया है। इस दर्पण में अपने आपको थोड़ा देखिये तो। कृतज्ञता का प्रकाशन भी करो तो यह मत समझो कि स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी स्वतन्त्रानन्द, पं. गंगाप्रसाद जी के कन्धों पर चढ़कर संसार का तमाशा देखने से कोई बौना उनसे बड़ा बन सकता है।

आचार्य धर्मवीर जी की स्मृति में स्थिर-निधि

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने परोपकारिणी सभा की स्थापना करते समय तीन उद्देश्य रखे थे-

१. वेद और वेदांगादि शास्त्रों के प्रचार अर्थात् उनकी व्याख्या करने-कराने, पढ़ने-पढ़ाने, सुनने-सुनाने, छापने-छपवाने आदि में, २. वेदोक्त-धर्म के उपदेश और शिक्षा अर्थात् उपदेशक-मण्डली नियत करके देश-देशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर में भेजकर सत्य के ग्रहण और असत्य के त्याग कराने आदि में ३. आर्यावर्तीय अनाथ और दीन मनुष्यों के संरक्षण, पोषण और सुशिक्षा में व्यय करें और करावें।

इन कार्यों को करने के लिये सभा का वर्तमान मासिक व्यय लगभग १२ लाख रुपये है, जो कि आर्यजनों के दान पर ही निर्भर है। परोपकारिणी सभा के कार्यकारिणी अधिवेशन सं. २२९ एवं साधारण अधिवेशन सं. १२० के प्रस्ताव १३ में आचार्य धर्मवीर जी द्वारा प्रारम्भ किये गये बृहत् प्रकल्पों (प्रकाशन, प्रचार, अध्यापन आदि) के लिये आचार्य धर्मवीर जी की स्मृति में एक करोड़ रुपये की स्थिर-निधि बनाने का संकल्प लिया गया है। आर्यजनों से निवेदन है कि इस पुनीत कार्य में अपना अधिक से अधिक सहयोग प्रदान कर आचार्य जी को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करें।

आप अपना दान चैक, ड्राफ्ट या सभा के खाते में सीधे भी भेज सकते हैं। कृपया, राशि भेजने के पश्चात् सभा में दूरभाष या पत्र द्वारा अवश्य सूचित कर दें।

मन्त्री

स्व. प्रो. धर्मवीर जी

श्रीपाल 'आर्योपदेशक'

दिन को ना चैन जिसे रात में विश्राम था
प्रो. धर्मवीर दूजा पं. लेखराम था
प्रो. धर्मवीर को हर कोई जानता है
विद्वत्ता का लोहा उनका विरोधी भी मानता है
दयानन्द का दिवाना वह, पीये वैदिक जाम था।।१।।
घर परिवार की चिन्ता सताई नहीं
दक्षिणा की पाई तक निज उपयोग में लगाई नहीं
तहरीर और तकरीर से इतर ना कोई काम था।।२।।
सभी उसके अपने थे कोई ना पराया था
ऋषिवर-कार्य बस एक सूत्र पाया था
अजमेर को बनाया उसने सच्चा तीर्थ धाम था।।३।।
ऋषि उद्यान में जो पुष्प रंग लाये हैं
सबके सब ये बिरवे उसके हाथ के रोपाये हैं
निराई गुड़ाई करता स्वयं प्रातः शाम था।। ४।।
विधर्मी भी काँपते थे सचमुच धर्मवीर से
करता खिंचाई सबकी तर्कपूर्ण तहरीर से
लेखनी का जादूगर वह आर्यों का धाम था।।५।।
रह-रह करके याद उनकी सभी को रुलावती
'श्रीपाल' वैसी मूर्ति ना नजरों में आवती
दर्द को काफूर करे निराली वह बाम था।।६।।

अतिथि-यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि-यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगाँठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय **जन्मतिथि/वैवाहिक वर्षगाँठ आदि व दूरभाष संख्या** सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नकद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में वर्ष २०१२ से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ नि:शुल्क दी जाती हैं। डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA AJMER)

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**

बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-**10158172715**

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आई**, पावर हाउस के सामने,

जयपुर रोड, अजमेर।

बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-**091104000057530**

IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन-जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग-यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था-भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था-भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर जी** के वेद-प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ् जी** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित् जी** के प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था-भजन' (चैनल) डिश-टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा-स्काई, वीडियोकॉन, बिग-टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार-बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

वेद में योग साधना के संकेत

आचार्य उदयवीर शास्त्री

आध्यात्मिक उन्नति व शाश्वत दु:ख निवृत्ति एवं आनन्द प्राप्ति के लिये प्राचीन ऋषि-मुनियों तथा अनुभवी आचार्यों ने जिस मार्ग का उपदेश किया है, वह है-योग-समाधि को प्राप्त करना। यह योग अथवा समाधि मन की स्थिरता-निर्विषयता पर अवलम्बित है। मन इन्द्रियों का जमींदार है और अन्तरात्मा का सेवक है। क्योंकि इन्द्रियाँ शरीर में बाहर को खुली हैं, वे सदा बाह्य विषयों की ओर स्वभावत: प्रवृत्त रहती हैं। उनकी इस प्रवृत्ति में मन पूरा सहयोग देता है। मन इतना तीव्र व चञ्चल है कि वह दसों इन्द्रियों के सहयोग के लिये अकेला ही काफी रहता है। प्रत्येक इन्द्रिय के अपने-अपने विषय एक-दूसरे से भिन्न हैं पर मन के लिये उन विभिन्न विषयों के आदान में कोई बाधा नहीं रहती, इन्द्रियों के द्वारा मन सभी विषयों को ग्रहण करने की क्षमता रखता है। इससे मन की तीव्र व चञ्चल स्थिति तथा उसकी आश्चर्यजनक रचना का अनुमान होता है।

ऐसे चञ्चल व तीव्र मन को स्थिर व निर्विषय करना कोई मजाक नहीं। अनुभवी आचार्यों ने इसके लिये जो उपाय सुझाये हैं, उनका मूल वेद में उपलब्ध होता है। इस विषय के कतिपय मन्त्र दिग्दर्शन मात्ररूप में यहाँ प्रस्तुत किये जाते हैं। एक मन्त्र इस प्रकार है।

युञ्जानः प्रथमं मनस्तत्त्वाय सविता धियः।
अग्नेर्ज्योतिर्निचाय्य पृथिव्या अध्याभरत्।।

(यजु. अ. ११.१)

मन्त्र का शब्दार्थ इस प्रकार है (यजु. अ. ११.१)(सविता) ऐश्वर्य-ज्ञान, ऐश्वर्य आनन्द, ऐश्वर्य की अभिलाषा रखने वाला पुरुष (तत्त्वाय) तत्त्व-ज्ञान के लिये (प्रथम) पहले, अथवा विभिन्न विषयों में फैले हुए (मन:) मन को, मन के व्यापार को एवं मननात्मिका अन्त:करण वृत्ति को तथा (धिय:) धारणात्मिका बुद्धि, बुद्धिवृत्तियों को (युञ्जान:) योग-प्रक्रियाओं द्वारा समाहित करता हुआ (अग्ने:) सर्वाग्रणी, प्रकाशस्वरूप, सर्वज्ञ, सर्वप्रकाशक प्रभु (ज्योति:) ज्ञान प्रकाश व आनन्दाविर्भाव को (निचाय्य) निश्चित रूप से जान व प्राप्त कर (पृथिव्या:) पृथिवी के लिये, सांसारिक समस्त जनों के लिये, अथवा पूर्ण विस्तार के लिये (अधि) अधिकारपूर्वक (आ) सब ओर, सब प्रकार से (भरत्) धारण करता है।

तत्त्वज्ञान द्वारा आनन्द-प्राप्ति का अभिलाषी पुरुष योग समाधि से मन को-अन्त:करण को प्रकाशस्वरूप सर्वज्ञ परमात्मा के साथ जोड़कर उस ज्ञान व आनन्द को प्राप्त करता और उसे जनता के लिये प्रसारित करता है।

योग की विधि और योग का प्रयोजन दोनों इस मन्त्र में संकेत द्वारा बतला दिये गये हैं। योगदर्शन में योग का स्वरूप बताया है- 'योगश्चित्तवृत्तिनिरोध:' चित्त-अन्त:करण की वृत्तियों का निरोध-रोकना योग है। यहाँ चित्तवृत्तियों का रोकना लिखा है, इन्द्रियवृत्तियों का रोकना नहीं लिखा। वस्तुत: बाह्य विषय व्यापार में इन्द्रियों की सार्थकता इसी बात पर अवलम्बित रहती है कि इन्द्रियों के साथ मन एवं अन्त:करण का सम्बन्ध बना रहे। यदि अन्त:करण का सम्बन्ध इन्द्रियों से नहीं रहता है, तो इन्द्रियाँ बाहर को खुली रहने पर तथा विषय के साथ सम्बन्ध रहने पर भी वह विषय के ग्रहण करने व पकड़ने में असमर्थ रहती हैं। अत: बाहर विषयों की ओर फैलने के लिये इन्द्रियों के साथ अन्त:करण का सम्बन्ध होना अत्यावश्यक है। यदि अन्त:करण को उधर से हटाकर अन्तरात्मा की ओर लगा दिया जाता है, तो इन्द्रियाँ आत्मा को विषयों की ओर आकर्षित करने के लिये बेकार हो जाती हैं। इसीलिये सूत्र में इन्द्रियों की उपेक्षा कर चित्त-अन्त:करण के निरोध का उल्लेख किया गया है।

सूत्रगत यह निर्देश पूर्णरूप से मन्त्रमूलक है, मन्त्र में 'मन' और 'धी-बुद्धि' को समाहित करने का उपदेश है। वे ही तो अन्त:करण हैं। फलत: योगमार्ग के यात्री को अन्त:करण वृत्तियों का निरोध करना परमावश्यक है। इसी भाव को मन्त्र ने स्पष्ट किया है-'प्रथमं मन: धिय: युञ्जान:'।

योग का प्रयोजन बताने के लिये मन्त्र में 'तत्त्वाय' पद है। तत्त्व-वस्तु का यथार्थ स्वरूप-स्वभाव जानना हो तो योग अनुष्ठान करना अपेक्षित होगा। योगानुष्ठान से बुद्धि-अन्तःकरण 'ऋतम्भरा' नामक स्थिति में पहुँच जाता है। 'ऋत' समस्त विश्व की उस व्यवस्था का नाम है जिसे प्रभु परमात्मा ने स्थापित किया है, तथा जिससे नियन्त्रित होता हुआ यह विश्व यथार्थरूप में चालू रहता है। उस 'ऋत' की स्थिति को समाहित योगी की बुद्धि समझने लगती है, उसी का नाम 'ऋतम्भरा' है, तब योगी उस 'ऋत' के प्रतीक में परमात्मा के प्रकाशस्वरूप को समझने की दिशा में प्रवृत्ति के लिये सक्षम हो जाता है।

इसी कारण योग के मर्मज्ञ, पूर्ण अनुभवी महर्षि पतञ्जलि ने 'ऋतम्भरा' के विषय में कहा है- 'श्रुतानुमानप्रज्ञाभ्यामन्यविषया विशेषार्थत्वात्' बुद्धि की यह ऋतम्भरा अवस्था श्रुतज्ञान और अनुमानज्ञान आदि से सर्वथा विलक्षण होती है, क्योंकि श्रुत-शब्द और अनुमान तो वस्तु का सामान्य-साधारण ज्ञान कराते हैं, परन्तु यह बुद्धि वस्तु का विशेष ज्ञान कराती है, जो 'विशेष' वस्तु का यथार्थ स्वरूप है। उसी के कारण वह वस्तु अन्य पदार्थों से व्यावृत्त हुई केवल अपने रूप में व्यवस्थित रहती है। इस प्रकार बुद्धि के 'ऋतम्भरा' अवस्था प्राप्त हो जाने पर उससे वस्तु का ज्ञान परम प्रत्यक्ष है। वह प्रत्यक्ष की चरम सीमा है, जो योग के बिना संभव नहीं। इसी तत्त्वज्ञान के लिये मन्त्र में योग का विधान बताया है।

योगी दो प्रकार के बताये जाते हैं-'**युक्त**' और '**युञ्जान**'। पहला '**युक्त**', सदा जो प्रभु के ध्यान में लीन रहता है, तथा जिसने योग-समाधि की पूर्ण अवस्था को प्राप्त कर लिया है। दूसरा '**युञ्जान**' वह है, जो यत्नपूर्वक निरन्तर अभ्यास से तत्त्वदर्शन-आत्मदर्शन प्राप्त कर लेने में संलग्न है। साधारण कोटि से कुछ उठे हुए पुरुष ही '**युञ्जान**' बन सकते हैं। ऐसा व्यक्ति '**युञ्जान**' दशा के बाद किसी समय अनवरत अभ्यास से '**युक्त**' बन जाता है। इसी कारण प्रस्तुत मन्त्र में '**युञ्जान**' पद से संकेत द्वारा इस स्थिति को प्रथम प्राप्त करने का उपदेश किया गया है।

शतपथ ब्राह्मण (६/३/१/१३) में इस मन्त्र की व्याख्या करते हुए लिखा है-'**तत्त्वाय सविता धियः इति-मनो वै सविता प्राणा धियः।**' इसके अनुसार मन-बुद्धि अर्थात् अन्तःकरण के निरोध के साथ 'प्राण' के निरोध का भी तात्पर्य प्रकट होता है। यह एक रहस्यपूर्ण बात है। इसमें समझना चाहिये कि मन और प्राण का पारस्परिक गहरा सम्बन्ध है। ध्यान-योग अथवा औपनिषद् उद्गीथ आदि की उपासना-साधनों से यदि मन का उपयुक्त निरोध हो जाय, तो प्राण स्वतः वशीभूत हो जाते हैं, उनकी अनियमित-अनियन्त्रित गति न रहकर ध्यान में उनसे किसी प्रकार की बाधा नहीं आती। यह योगमार्ग की एक उत्तम स्थिति है। इस प्रकार मन और प्राणों के रुकने से अन्य समस्त वृत्तियाँ शान्त हो जाती हैं।

यदि किसी कारण से प्रथम मन एवं अन्तःकरण के निरोध में बाधा आये और अति चञ्चल होने के कारण मन के रोकने में कठिनाई का अनुभव हो, तो उस स्थिति में लक्ष्यप्राप्ति के लिये प्राण का सहयोग लेना चाहिये। तात्पर्य यह है, इस दशा में प्राणायाम का तीव्र व निरन्तर अभ्यास प्राणों को संयत कर मन के स्थिर व एकाग्र करने का अचूक उपाय है। मन के शान्त रहने पर इन्द्रियाँ भी विषयों की ओर खिंचना कम कर देती हैं, कारणों की इस उपरति से व्यक्ति को शान्ति व सन्तुष्टि का लाभ होता है।

सूक्ष्मदृष्टि से विचार करने पर यह प्रतीत होता है कि प्राणायाम से लेकर समाधिपर्यन्त योग के पाँच अङ्गों का उपदेश इस मन्त्र के द्वारा अभिव्यक्त हो जाता है। यम-नियम का पालन प्रत्येक व्यक्ति के लिये लाभदायक सुफलप्रद रहता है। आसन योगाङ्ग योगमार्ग पर चलने वाले के लिये अनिवार्य है।

इस विषय में अन्य कतिपय मन्त्र इस प्रकार हैं- **युक्तेन मनसा वयं देवस्य सवितुः सवे। स्वर्ग्याय शक्त्या**।। (यजु. ११.२)

(वयम्) हम (युक्तेन) युक्त-योग समाधि सम्पन्न (मनसा) मन से तथा (शक्त्या) शक्ति से (सवितुः) विश्व के उत्पादक, सर्वैश्वर्यसंपन्न, सर्वप्रेरयिता (देवस्य) दिव्य, शुभ गुण प्रदाता प्रभु के (सवे) इस उत्पादित संसार में (स्वर्ग्याय) सुखसाधक कार्य के लिये (परमात्मप्रकाश को धारण करते हैं)।

योगी की दो अवस्था-**युक्त** और **युञ्जान**-की चर्चा

गत पंक्तियों में की गई है। उस मन्त्र में 'युञ्जान' का संकेत है और यहाँ 'युक्त' बनने की प्रेरणा की गई है। उसके लिये दो साधन बताये, जिनसे परमात्मप्रकाश होता है। एक-योग संलग्न मन, दूसरा-शक्ति। शक्ति से दोनों प्रकार की शक्ति समझना चाहिये,-शारीरिक और आत्मिक। दुर्बल शरीर, दुर्बलेन्द्रिय, पतितात्मा व्यक्ति अपने जीवन लक्ष्य की प्राप्ति में कभी सफल नहीं हो सकता। अत: सब प्रकार की शक्ति का सतत संचय करना आवश्यक है, जिसका आधार योग है-**'नास्ति योगसमं बलम्'**। योग के समकक्ष अन्य कोई बल-शक्ति नहीं है- योगसम्पन्न व्यक्ति के लोक-परलोक दोनों सुधर जाते हैं। अन्य एक मन्त्र है-

युञ्जते मन उत युञ्जते धियोऽविप्राः।
विप्रस्य बृहतो विपश्चितः।
वि होत्रा दधे वयुनाविदेक इन्,
मही देवस्य सवितुः परिष्टुतिः।।

(होत्राः) दान-आदानशील (विप्राः) मेधावी जन (विप्रस्य) परम मेधावी, प्राणियों की कामनाओं को पूर्ण करने वाले (बृहतः) महान् (विपश्चितः) परम ज्ञानी की प्राप्ति के लिये (मनः) मन को, अन्त: करण को (युञ्जते) योग समाधि सम्पन्न बनाते हैं, (उत) और (धियः) प्राणों को (युञ्जते) योगयुक्त करते हैं क्योंकि वह परमात्मा (एकः) अकेला (इत्) ही (वयुनावित्) कर्मो और ज्ञानों को, आचार और विचारों को जानने वाला है। वही (विदधे) विविध प्रकार की सृष्टि एवं पदार्थों को धारण करता है। (सवितुः) सकल जगदुत्पादक, सर्वसुखप्रदाता (देवस्य) दिव्यगुण सम्पन्न प्रभु की यही (मही) बड़ी (परिष्टुतिः) स्तुति है।

जगन्नियन्ता परमात्मा शक्ति में सबसे महान् और ज्ञान में सर्वोच्च है। इसी कारण योगमार्ग का प्रेमी जिज्ञासु व्यक्ति शक्ति व पूर्णज्ञान की प्राप्ति के लिये उसी प्रभु की स्तुति करता है। वेद बताता है-परमात्मा की सबसे बड़ी स्तुति यही है कि मनुष्य उसके गुण और कर्म जानकर उन्हें प्राप्त करने के लिये प्रयत्नशील रहे। प्राप्ति का उपाय मन्त्र में बताया-योग द्वारा मन का निरोध करना तथा प्राणायाम आदि योगाङ्गों के अनुष्ठान से अन्तर्वृत्ति-स्थिति का प्राप्त करना। यही उस प्रभु की यथार्थ व बड़ी स्तुति है।

प्राणियों के आचार-विचार प्रभु से कभी छिपे नहीं रहते। वह सर्वनियन्ता जीवों के शुभाशुभ कर्मों के अनुसार-सृष्टि में अनन्त विभूतियों की उपलब्धि के द्वारा-शुभाशुभ फल दिया करता है। प्रभु के इस गुण को जानकर मानव उसकी ओर आकृष्ट रहे, जीवन का यही परम लक्ष्य है।

वेदों में योग-विषयक उपदेश पर्याप्त हैं। दिग्दर्शनमात्र यह प्रस्तुत किया है।

वैदिक पुस्तकालय, अजमेर की पुस्तकों की राशि ऑनलाइन जमा कराने हेतु

बैंक का नाम - **पंजाब नेशनल बैंक, कचहरी रोड, अजमेर।**

बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - **0008000100067176**

IFSC - PUNB0000800

आगामी ऋषि मेला
२७, २८, २९ अक्टूबर २०१७, शुक्र, शनि, रविवार
स्थान- ऋषि उद्यान, अजमेर

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष-साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़कर ये प्रवचन नि:शुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष-ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिखकर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें, अन्यथा शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उन पर '**परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया, राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA AJMER)

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-0911040000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावर हाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।
IFSC - SBIN0007959

विद्वान् स्त्रियों को योग्य है कि अच्छी परीक्षा किए हुए पदार्थ को जैसे आप खायें वैसे ही अपने पति को भी खिलावें कि जिससे बुद्धि, बल और विद्या की वृद्धि हो और धनादि पदार्थों को भी बढ़ाती रहें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४२

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

लोकोत्तर धर्मवीर-३

तपेन्द्र वेदालंकार- आई.ए.एस. (रिटायर्ड)

महर्षि दयानन्द जी महाराज ने प्रथम १६.०८.१८८० को मेरठ में परोपकारिणी सभा की स्थापना की थी तथा उपपंजीयक मेरठ के कार्यालय में पंजीयन कराया था। लाहौर निवासी लाला मूलराज को सभा-प्रधान तथा आर्यसमाज मेरठ के उपप्रधान लाला रामशरण दास को सभा मन्त्री नियुक्त किया गया था। महर्षि ने प्रथम सभा को निरस्त कर दिया तथा २७ फरवरी १८८३ को सभा का पुनर्गठन किया तथा उदयपुर में पंजीकरण कराया। सभा के तीन मुख्य उद्देश्य रखे गये-**प्रथम**-वेद वेदाङ्गादि के प्रचार अर्थात् उसकी व्याख्या करने-कराने, पढ़ने-पढ़ाने, सुनने-सुनाने, छापने-छपवाने आदि का कार्य। **द्वितीय**- वेदोक्त धर्म के उपदेश और शिक्षा अर्थात् उपदेशक मण्डली नियत करके देश-देशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर में भेजकर सत्य के ग्रहण और असत्य के त्याग करने का कार्य। **तृतीय**- आर्यावर्तीय अनाथ और दीन मनुष्यों के संरक्षण, पोषण और सुशिक्षा में धन व्यय करने और कराने का कार्य।

महर्षि की उत्तराधिकारिणी इस परोपकारिणी सभा में २३ सभासद् थे। मेवाड़ नरेश राणा सज्जन सिंह जी प्रथम सभापति थे। लाला मूलराज जी लाहौर उपसभापति, कविराज श्यामलदास जी उदयपुर मन्त्री, १ लाला रामशरणदास जी रईस मेरठ-मन्त्री, २. पाण्ड्या मोहनलाल विष्णुलाल जी शर्मा मथुरा-उपमन्त्री, शाहपुराधीश नाहर सिंह जी वर्मा, राव तखत सिंह जी मेवाड़, राजराणा फतहसिंह जी देलवाड़ा, राव अर्जुन सिंह जी वर्मा आसीन्द, महाराज गजसिंह जी वर्मा उदयपुर, राव बहादुर सिंह जी वर्मा मसूदा, रायबहादुर पं. सुन्दर लाल जी आगरा, राजा जयकृष्णदास जी मुरादाबाद, श्री दुर्गाप्रसाद जी फर्रुखाबाद, साहू जगन्नाथ जी फर्रुखाबाद, सेठ निर्भयराम जी बिसाऊ, लाला कालीचरण रामचरण जी फर्रुखाबाद, बाबू छेदीलाल जी गुमाश्ते मुरार, लाल सांईदास जी लाहौर, बाबू माधवदास जी दानापुर, रायबहादुर गोपाल राव हरि देशमुख जी पूना, रायबहादुर महादेव गोविन्द रानाडे जी पूना, पं. श्याम जी कृष्ण वर्मा-लन्दन को सभासद् बनाया गया था। महर्षि ने जीवनकाल में ही प्रेस, पुस्तक आदि सभा को दे दिये थे।

उस समय तक प्रतिनिधि सभाएँ तो बनी नहीं थीं। लाहौर व मेरठ आर्यसमाज के गढ़ थे तथा १८८६ में इन्हीं दोनों स्थानों पर प्रतिनिधि सभाओं का प्रारम्भिक कार्य शुरु हुआ था। महर्षि के असामयिक निधन से सारा आर्यजगत् परोपकारिणी सभा की ओर ही देखता था। यहाँ तक कि सन् १८८७ में परोपकारिणी सभा के अधिवेशन की २८-२९ दिसम्बर की तिथियों में पश्चिमोत्तर प्रदेश व अवध की आर्य प्रतिनिधि सभाओं का अधिवेशन अजमेर में ही रखा गया था। यही वह अधिवेशन था जिसमें शाहपुराधीश श्रीयुत् नाहरसिंह जी की ओर से बाबा जीवनराम जी ने आना सागर के किनारे पर विद्यमान उद्यान सभा को भेंट किया था। पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी के अनुसार-''दूसरे रोज प्रात: काल ९ बजे से आश्रम का बुनियादी पत्थर रखने की विधि का समारोह था। प्रात:काल ही बाहर से आये हुए और अजमेर के सज्जन इकट्ठे होकर भजन गाते हुए आनासागर की ओर रवाना हुए। उद्यान में पहुँचकर पहले ईश्वरभक्ति के भजन हुए, फिर पं. गुरुदत्त जी व अन्य विद्वानों ने मिलकर वेद-पाठ किया। परोपकारिणी सभा की ओर से पं. मोहनलाल विष्णुलाल पाण्ड्या द्वारा आश्रम की आधार शिला के साथ एक बोतल में वेदभाष्य के कुछ अंक भी रखे गये। उसी स्थान पर ऋषि की अस्थियों की स्थापना की गयी। विधि समाप्त होने पर हिसार के वकील लाला लाजपतराय जी का एक प्रभावशाली भाषण हुआ। ऋषि के शिष्य रतलाम के दीवान पं. श्याम जी कृष्ण वर्मा ने एक छोटे से भाषण में ऋषि का गुणानुवाद किया।''

वर्तमान यज्ञशाला का भाग शाहपुराधीश की सम्पत्ति था तथा जिस भाग में गौशाला, सरस्वती भवन स्थित है। वह भाग बख्शी जी का बाग था जिसे सभा ने क्रय कर लिया था। ऋषि-उद्यान सभा के कार्यों का प्रमुख केन्द्र स्थल है। ऋषि मेले में हजारों आर्यजन एकत्रित होकर महर्षि को श्रद्धाञ्जलि देते हैं। ऋषि-उद्यान आर्यों के लिए

ंभवत: सर्वाधिक परिचित स्थानों में से एक है तथा ऋषि ला तो सर्वाधिक प्रतीक्षित रहता ही है।

ऋषि उद्यान में सरस्वती भवन की भव्य इमारत स्थत थी, एवं व्यायामशाला का भवन तथा उसके पास ो-तीन कक्षों का अतिथि-गृह था। लेखराम भवन के थान पर ८-१० स्नानागार बने हुए थे जो मेले के समय ाम आते थे, अनुसन्धान भवन के स्थान पर कुछ छोटे ामरे थे, बीच में यज्ञशाला बनी हुई थी। भोजन की व्यवस्था ऋषि उद्यान में नहीं थी इसलिए बहुत कम ही अतिथि ठहर पाते थे क्योंकि भोजन के लिए बाहर जाना पड़ता था, ब आस-पास बाजार भी नहीं था। उच्च अधिकारियों से वेचार-विमर्श कर आचार्य धर्मवीर जी ने भोजन-व्यवस्था करने का निश्चय किया। वर्तमान ट्रस्टी श्री वीरेन्द्र जी के सहयोग से श्री फालसिंह को ऋषि-उद्यान में रखा गया तथा फालसिंह व उनकी पत्नी से भोजन बनवाने की व्यवस्था प्रारम्भ की गयी। अतिथि-जनों ने ठहरना प्रारम्भ किया। फिर क्या था-अनाज, दाल, घी आदि का दान मिलने लगा। १०० थालियाँ पं. भगवानसहाय जी ने दान दे दीं। फसल के समय सभा के कार्यकर्त्ता अनाज एकत्रित करने हेतु जाने लगे। आचार्य धर्मवीर की विश्वसनीयता से दानदाताओं ने दिल खोलकर दान देना शुरु कर दिया। आज कितने भी आर्य अतिथि ऋषि-उद्यान में आ जावें सबके भोजन की व्यवस्था होती है।

ऋषि-उद्यान में प्रवेश करते ही कुछ कमरे बने हुए थे जिनमें फालसिंह व उनका परिवार रहता था। प्रारम्भ में भोजन वहीं पर बनता था। इन्हीं में से एक कमरे में सभा का कार्यालय भी मेले के अवसर पर चलता था। अतिथि बढ़ गये तो भोजनशाला बनाने की बात आयी। आचार्य धर्मवीर जी को भोजनशाला हेतु प्रथम दान संभवत: श्री पन्नालाल जी गैना जेठाना से ९०००/-रुपये प्राप्त हुआ। कार्य प्रारम्भ हो गया, होता गया-दान आता गया। यह आचार्य धर्मवीर जी की साख ही थी कि उन्हें अजमेर से लाखों रुपये का सामान उधार मिल जाता था, कई बार ऐसी स्थिति भी आ जाती थी कि उधारी चुकाने हेतु पैसा पास नहीं होता था। एक बार ऐसा ही हुआ- डेढ़ लाख रुपये का उधार हो गया, सेठ जी चुकाने के लिए तकाजा करने लगे। निकल पड़े माँगने। आचार्य धर्मवीर जी व ओम्मुनि जी जालंधर पहुँचे। वहाँ के आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान दानवीर थे। उन्होंने पचास हजार रुपये दान दिये, उन्हें परिस्थिति बतायी तो डेढ़ लाख का दान मिल गया। उधार चुक गया। व्यक्तिगत आर्थिक संकट के समय भी आचार्य धर्मवीर ने कभी किसी के समक्ष हाथ नहीं फैलाया, लेकिन सभा के लिए तो कहीं भी, कभी भी जाकर माँग लेते थे। आज भव्य भोजनशाला बनी हुई है, जिसमें सैकड़ों लोग एक-साथ बैठकर भोजन कर सकते हैं। भवन के निर्माण में एक-एक चीज उन्होंने स्वयं देखी यहाँ तक कि कोटा स्टोन लेने दो बार रामगंजमण्डी जिला कोटा गये व पत्थर लाये।

परोपकारिणी सभा में आगन्तुक अतिथियों की संख्या बढ़ रही थी अत: आवास-व्यवस्था की आवश्यकता अनुभव की गयी। आचार्य धर्मवीर ने कुछ कमरे बनाने का विचार किया। लेखराम भवन का पहला कमरा माता उर्मिला राजोत्या ने अपने पिता जी पं. ब्रजलाल शर्मा की स्मृति में बनवाया। दानदाताओं ने कमरों के लिए दान देना प्रारम्भ कर दिया, एक स्थिति तो यह आ गयी कि कक्ष निर्माण हेतु दानदाता ज्यादा थे, परन्तु स्थान को ध्यान में रखकर कक्ष-निर्माण में परेशानी अनुभव हो रही थी। आज ऋषि उद्यान में लेखराम भवन, ओमानन्द भवन, अनुसन्धान भवन, योग भवन आदि में १०० से अधिक कमरे उपलब्ध हैं जिनमें अधिकांश में स्नानागार साथ में है। आचार्य धर्मवीर की धन-शुचिता, कर्मठता एवं विश्वसनीयता ही है कि जिसने कुछ वर्षों पूर्व ऋषि-उद्यान के दर्शन किए हों, वह आज ऋषि-उद्यान को देखे तो शायद पहचान न पावे।

आचार्य धर्मवीर का दृढ़ विश्वास था कि सामाजिक कार्य समाज की सहायता के बिना नहीं हो सकता। स्वयं के बारे में कहते थे कि हमारा सामर्थ्य तो ईंट लगाने का भी नहीं, यहाँ करोड़ों का काम समाज के सहयोग के भरोसे ही हुआ है। वे कहते थे कि अनजान से अनजान व्यक्ति भी सहयोग करता है, उसको यह जंचना चाहिए कि आप ठीक कर रहे हैं।

एक सज्जन ऋषि-उद्यान आये, प्रभावित हुए, अनुसन्धान भवन का विचार उनके समक्ष रखा गया, उन्होंने

५० लाख रु दान देने का आश्वासन दिया, संभवत: दो-तीन लाख रुपये सभा को प्राप्त भी हुए। बाद में उन्होंने कुछ बिन्दु उठाये जिन पर सभा सहमत नहीं थी अत: राशि प्राप्त नहीं हो पायी। अनुसन्धान भवन तो बनाना ही था। डॉ. क्षेत्रपाल अजमेर के प्रसिद्ध नेत्र चिकित्सक हैं उन्होंने ऋषि उद्यान में नेत्र चिकित्सा शिविर लगाया। उन्होंने कहा आप यहीं पूजा, उत्सव आदि करते हैं यहीं पर चिकित्सा-शिविर लगा रहे हैं। आचार्य धर्मवीर ने उत्तर दिया किसी का घर एक कमरे का हो तो उसी में सब काम करने होते हैं। डॉ. क्षेत्रपाल ने कहा-हॉल बनाओ, एक लाख रुपये मैं देता हूं। मरीजों के परिजनों ने भी एक लाख का आश्वासन दे दिया। आचार्य धर्मवीर ने अनुसन्धान भवन के स्थान पर बने कमरे तुड़वाकर बड़ी-सी नींव भरवानी शुरु कर दी। सभा के प्रधान आदि आये, इतनी बड़ी नींव देखी, बोले-इतना पैसा कहाँ से लाओगे, कहीं इज्जत खराब न हो जावे। धर्मवीर जी हास्य में बोले-इज्जत जिनकी है उनकी खराब होनी है- हम तो कार्यकर्त्ता हैं। तत्कालीन प्रधान व वर्तमान सभा-संरक्षक श्री गजानन्द जी आर्य ने तुरन्त परिश्रम कर २५ लाख रुपये एकत्रित कर भेजे, जिसमें अधिकांश राशि उनके सम्बन्धी जनों की थी। आज करोड़ से ज्याद रुपयों की लागत से बना अनुसन्धान भवन हमारे सामने है, जिसका नाम सभा ने आचार्य धर्मवीर के नाम पर रख दिया है। इसमें हॉल है, बड़े कमरे हैं। २४ कमरे आवासीय हैं। गुरुकुल इसी भवन में चल रहा है।

आचार्य धर्मवीर का एक ही लक्ष्य था, एक ही आकांक्षा थी-सभा की उन्नति, उन्होंने इस सभा को अपने अन्त:करण में उतार लिया था। आँधी-तूफान, शीत-उष्ण, भय-प्रेम, समृद्धि-असमृद्धि-उन्हें सभा कार्य से नहीं रोक सका था-वे सच्चे तपस्वी थे।

यस्य कार्यं न विघ्नन्ति शीतमुष्णं भयं रतिः।
समृद्धिरसमृद्धिर्वा स वै तापस उच्यते।।

''हैदराबाद मुक्ति संग्राम का इतिहास'' के दूसरे संस्करण के लिए शुभ सन्देश

दिनकरराव देशपांडे

डॉ. चन्द्रशेखर लोखण्डे जी ने लगभग पाँच साल के अथक परिश्रम से ''हैदराबाद मुक्ति संग्राम का इतिहास'' यह ग्रन्थ लिखा है। मराठी, तेलंगाना और कन्नड़ भाषी लेखकों ने अपने ग्रन्थों में आर्यसमाज के संघर्ष और बलिदान की उपेक्षा की और आर्य लेखकों ने अन्य संस्था द्वारा किये गये संघर्ष की अनदेखी की। इस कारण किसी भी लेखक द्वारा परिपूर्ण इतिहास लिखा नहीं गया। लेकिन डॉ. चन्द्रशेखर लोखंडेजी ने हैदराबाद की आजादी में सभी के योगदान का उल्लेख किया है जिसे हम परिपूर्ण इतिहास कह सकते हैं। जैसे स्टेट काँग्रेस, हिन्दू महासभा, वन्देमातरम् आन्दोलन, वकीलों का आन्दोलन, किसानों का आन्दोलन तथा आर्यवीरों का बलिदान आदि। डॉ. लोखण्डे जी ने पूर्वाग्रह, दूषित या एकांगी सोच रखकर यह इतिहास नहीं लिखा है। गवेषकों, शोधार्थियों एवं सामान्य पाठकों के लिये यह ग्रन्थ अत्युपयोगी और परिपूर्ण होगा-ऐसा मैं मानता हूँ। इसका पहला संस्करण समाप्त हो चुका था। श्री घूड़मल प्रह्लाद कुमार आर्य धर्मार्थ ट्रस्ट के सुयोग्य प्रकाशक श्री प्रभाकर देव जी ने इसे दूसरी बार प्रकाशित करने का निश्चय किया है। अत: जल्दी ही यह ग्रन्थ जिज्ञासु पाठकों के हाथों में होगा। महाराष्ट्र के एक मुस्लिम बुद्धिजीवी **सैय्यद अब्दुल हादी** इस ग्रन्थ के बारे में कहते हैं-''डॉ. चन्द्रशेखरजी ने (हैदराबाद मुक्ति संग्राम का इतिहास) यह किताब लिखकर उत्तरी हिन्दुस्तान के लोगों तक इस तवारिख (इतिहास) को पहुँचाने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। उन्होंने इस इतिहास को बड़े उम्दा ढंग से लिखा है जिसे कई लोगों ने हिन्दू-मुसलमानों का संघर्ष कहकर बदनाम किया था, उन तक पहुँचाने की कोशिश की है, जो कामयाब हुई है।''

विशेष यह कि उनके इस ग्रन्थ का मराठी भाषा में भी प्रकाशन हुआ है जो सम्पूर्ण महाराष्ट्र में लोकप्रिय है। अत: इस ग्रन्थ के द्वितीय संस्करण के लिए उन्हें शुभकामना।

।।ओ३म्।।

वेद गोष्ठी २०१७ के लिए निर्धारित विषय

वेदों में शिक्षा के सिद्धान्त

उपशीर्षक :

1. ऋग्वेद में शिक्षा चिन्तन की मीमांसा
2. ऋग्वेद में शिक्षा के प्रमुख सिद्धान्त और उनकी विवेचना
3. ऋग्वेद में शिक्षक और शिष्य सम्बन्धों की मीमांसा
4. ऋग्वेद में शिक्षा का पाठ्यक्रम - विश्लेषणात्मक अध्ययन
5. ऋग्वेद में शिक्षण-विधि के विभिन्न आयाम
6. ऋग्वेद के प्रमुख शिक्षाशास्त्री और उनके विचार
7. यजुर्वेद में शिक्षा चिन्तन की मीमांसा
8. यजुर्वेद में शिक्षा के प्रमुख सिद्धान्त और उनकी विवेचना
9. यजुर्वेद में शिक्षक और शिष्य सम्बन्धों की मीमांसा
10. यजुर्वेद में शिक्षा का पाठ्यक्रम - विश्लेषणात्मक अध्ययन
11. यजुर्वेद में शिक्षण-विधि के विभिन्न आयाम
12. यजुर्वेद के प्रमुख शिक्षाशास्त्री और उनके विचार
13. सामवेद में शिक्षा चिन्तन की मीमांसा
14. सामवेद में शिक्षा के प्रमुख सिद्धान्त और उनकी विवेचना
15. सामवेद में शिक्षक और शिष्य सम्बन्धों की मीमांसा
16. सामवेद में शिक्षा का पाठ्यक्रम - विश्लेषणात्मक अध्ययन
17. सामवेद में शिक्षण-विधि के विभिन्न आयाम
18. सामवेद के प्रमुख शिक्षाशास्त्री और उनके विचार
19. अथर्ववेद में शिक्षा चिन्तन की मीमांसा
20. अथर्ववेद में शिक्षा के प्रमुख सिद्धान्त और उनकी विवेचना
21. अथर्ववेद में शिक्षक और शिष्य सम्बन्धों की मीमांसा
22. अथर्ववेद में शिक्षा का पाठ्यक्रम - विश्लेषणात्मक अध्ययन
23. अथर्ववेद में शिक्षण-विधि के विभिन्न आयाम
24. अथर्ववेद के प्रमुख शिक्षाशास्त्री और उनके विचार
25. वेदांग में प्रमुख शिक्षा के सिद्धान्त
26. वैदिक काल में शिक्षा दर्शन
27. उपनिषदों में शिक्षण की विभिन्न शैलियाँ
28. उपनिषदों में आचार्य और शिष्य सम्बन्धों की विवेचना
29. उपनिषदों में अध्ययन का पाठ्यक्रम
30. उपनिषदों के संदर्भ में गुरुकुलों की विवेचना
31. उपनिषदों में शिक्षा का परम उद्देश्य
32. उपनिषदों में शिक्षण-विधि की विवेचना
33. प्राचीन भारतीय शिक्षा दर्शन
34. प्राचीन भारत में शिक्षण-विधि और प्रकार
35. प्राचीन भारत में शिक्षा के विभिन्न उपागमों का अध्ययन
36. वैदिक साहित्य में आचार्य की भूमिका
37. मनुस्मृति में शिक्षा के सिद्धान्त
38. षड्दर्शनों में शिक्षण के सिद्धान्त
39. षड्दर्शनों में आचार्य-शिष्य सम्बन्धों का आलोचनात्मक विवेचन
40. न्याय-वैशेपिक दर्शनों में शिक्षा के सिद्धान्त
41. न्याय-वैशेषिक दर्शनों में शिक्षण की प्रमुख विधि
42. सांख्य-योग में शिक्षा दर्शन
43. वैदिक शिक्षा दर्शन में शिक्षण संस्थानों का प्रशासन-आर्थिक परिप्रेक्ष्य में
44. वैदिक शिक्षा दर्शन एवं आधुनिक शिक्षा-शास्त्री विशेषत: महर्षि दयानन्द सरस्वती के संदर्भ में
45. वेदों में शिक्षा के सिद्धान्त और महर्षि दयानन्द
46. वैदिक शिक्षण-विधियाँ उनकी क्रियात्पक पक्ष के संदर्भ में
47. वैदिक शिक्षा सिद्धान्त और आधुनिक भारतीय शिक्षा-शास्त्री
48. प्राचीन भारत में शिक्षा-दर्शन, उसकी प्रक्रिया एवं साधन
49. वैदिक शिक्षा के सिद्धान्त मानव के परम लक्ष्य के संदर्भ में
50. वेदों में शिक्षा के सिद्धान्त-बाल शिक्षा के संदर्भ में
51. वेदों में शिक्षा के सिद्धान्त : महिला शिक्षण के संदर्भ में

52. वैदिक शिक्षा चिन्तन और महिला शिक्षण की प्रक्रियाएँ
53. वैदिक शिक्षा एवं प्राचीन शिक्षा-शास्त्री
54. वैदिक महिला शिक्षा-शास्त्री और उनके सिद्धान्त
55. वैदिक शिक्षण की पद्धतियाँ और आधुनिक शिक्षण की विधियों का तुलनात्मक अध्ययन
56. वैदिक शिक्षा के सिद्धान्त और समकालीन भारतीय शिक्षा-शास्त्री : एक तुलनात्मक विवेचन
57. वैदिक शिक्षा में मनोविज्ञान की विवेचना
58. वैदिक शिक्षा में अधिगम प्रक्रिया और सिद्धान्त
59. वैदिक शिक्षा में अभिप्रेरण के प्रमुख सिद्धान्त
60. वैदिक शिक्षा में व्यक्तित्व एवं उसके मापन की विधियाँ
61. वैदिक शिक्षा में बुद्धि विवेचन एवं बुद्धि विकास के विभिन्न प्रकार
62. वैदिक शिक्षा में व्यक्तित्व का स्वरूप, अर्थ, परिभाषा और व्यवहार के संदर्भ में
63. वैदिक शिक्षा में व्यावसायिक शिक्षा
64. वैदिक शिक्षा में वातावरण का महत्व
65. वैदिक शिक्षा में सृजनात्मकता के सिद्धान्त
66. वैदिक शिक्षा का परम लक्ष्य
67. महर्षि दयानन्द और वैदिक शिक्षा
68. वैदिक शिक्षा में अभिरुचि और मनोविज्ञान के प्रमुख सिद्धान्त
69. वैदिक शिक्षा और भाषा अध्ययन
70. वैदिक शिक्षा और विज्ञान शिक्षण की विधियाँ
71. वैदिक शिक्षा और स्वास्थ्य चिन्तन
72. वैदिक शिक्षा में योग की भूमिका
73. वैदिक शिक्षा में आचार्य चिन्तन की भूमिका
74. स्मृतियों में शैक्षिक विचार - एक अध्ययन
75. वैदिक शिक्षा : वर्तमान अपेक्षायें और चुनौतियाँ
76. वैदिक शिक्षा : नारी सशक्तिकरण के संदर्भ में
77. वैदिक शिक्षा में मूल्यों की उपादेयता - एक समीक्षा
78. वैदिक शिक्षा : शिक्षक और शैक्षणिक तंत्र
79. 21वीं सदी में वैदिक शिक्षा - एक मूल्यांकन
80. विकास की दहलीज पर वैदिक शिक्षा की भूमिका
81. राजधर्म के परिप्रेक्ष्य में वैदिक शिक्षा
82. वैदिक शिक्षा : कृषि के संदर्भ में
83. वैदिक शिक्षा - शहरीकरण के संदर्भ में
84. वैदिक शिक्षा में एकाग्रता बोध
85. वैदिक शिक्षा में शारीरिक शिक्षा
86. वैदिक शिक्षा में अभिभावक की भूमिका
87. वैदिक शिक्षा तथा विद्यालय (गुरुकुल) प्रशासन
88. वैदिक शिक्षा में दीक्षान्त परम्परा के तत्व
89. वेदो में शैक्षिक निहितार्थ की प्रासंगिता
90. वैदिक शिक्षा का मूल्य तत्व - संस्कार शिक्षा - एक मौलिक चिन्तन
91. ब्राह्मण ग्रन्थों में शिक्षा के सिद्धान्त
92. वैदिक शिक्षा और समय की चुनौतियाँ
93. वैदिक शिक्षा और अनुसंधान - एक समीक्षा
94. वैदिक शिक्षा-सिद्धान्त बाल शिक्षा के लिए व्यापक उपागम - एक अध्ययन
95. वेदों में शिक्षा के सिद्धान्त - व्यवसायीकरण शिक्षा के संदर्भ में
96. वेदों में शिक्षा-सिद्धान्त - सामाजिक परिप्रेक्ष्य के संदर्भ में
97. वैदिक शिक्षा और अध्ययन के विभिन्न विषय
98. वैदिक शिक्षा और गणित शिक्षण
99. वैदिक शिक्षा और कला के सिद्धान्त
100. वैदिक शिक्षा में कला शिक्षण
101. वैदिक शिक्षा और राज्य की भूमिका
102. वैदिक शिक्षा-शासन के संदर्भ में
103. वैदिक शिक्षा और मानव निर्माण
104. वैदिक शिक्षा में शिक्षक के कर्त्तव्य और दायित्वों की विवेचना
105. वैदिक शिक्षा - बुनियादी शिक्षा के ढाँचे के संदर्भ में
106. वैदिक शिक्षा में जीवन मूल्य
107. वैदिक शिक्षा - भाषा, समाज और संस्कृति के संदर्भ में
108. वैदिक शिक्षा में लिंग समानता
109. वैदिक शिक्षा में नैतिकता
110. वैदिक शिक्षा में मानव मूल्य
111. वेदों में शिक्षा के सिद्धान्त और समान शैक्षिक अवसर
112. वेदों में शिक्षा में गुणवत्ता और विषय-वस्तु
113. वेदों में शिक्षा सिद्धान्त और पाठ्यक्रम की गतिपरकता
114. वैदिक शिक्षा में पर्यावरण-उपागम - एक विवेचन
115. वेदों में शिक्षक-शिक्षा के मूल तत्त्व
116. वेदों में शिक्षा सिद्धान्त - इक्कीसवीं शताब्दी के लिए

अमृतमश्नुते

शिवनारायण उपाध्याय

यजुर्वेद अध्याय ४० परा एवं अपरा विद्या का भण्डार है। हममें से हर व्यक्ति अमृतत्व को प्राप्त करना चाहता है। यह अमृतत्व कैसे प्राप्त होगा-यह इस अध्याय में बताया गया है। अमृतत्व प्राप्त करने के लिए हमें ज्ञान-कर्म और उपासना के समुच्चय को समझकर उसका उचित ढंग से उपयोग करना होता है। इस अध्याय के प्रथम दो मन्त्र ज्ञान और कर्म के विषय में ही उल्लिखित हैं।

ओ३म् ईशावास्यमिदँ्सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्।

– यजुर्वेद ४०.१

अन्वयार्थ-(जगत्याम्) इस विश्व ब्रह्माण्ड में (यत् किञ्च) जो कुछ भी (जगत्) परिवर्तनशील है, (इदम्) इन (सर्वं) सबको (ईशा) परमात्मा के द्वारा (वास्यम्) आच्छादित कर देना चाहिए। (तेन) इस (त्यक्तेन) त्याग के द्वारा (अपना) (भुञ्जीथाः)पालन-पोषण करना चाहिए। (कस्य स्वित्) किसी के भी (धनम्) धन का (मा गृधः) लालच मत करो।

भावार्थ-इस जगत् में (चर-अचर) जो कुछ भी परिवर्तनशील है, सबको ईश्वर से आच्छादित कर लेना चाहिए। इस त्याग के द्वारा अपना पालन करना चाहिए। किसी के भी धन का लोभ नहीं करना चाहिए।

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतꣳसमाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।।

– यजुर्वेद ४०.२

पदार्थ-(इह) यहाँ (इस लोक या शरीर में) (कर्माणि) कर्मों को (कुर्वन्) करते हुए (एव) ही (शतम्) सौ (समाः) वर्षों तक (जिजीविषेत्) जीवित रहने की इच्छा करनी चाहिए। (एवम्) ऐसे (त्वयि) तुम (नरे) मनुष्य के लिए (इतः) इसे छोड़ (अन्यथा) दूसरा मार्ग (विकल्प) (न) नहीं (अस्ति) है (येन) जिससे (कर्म) कर्म (के दोष) (न लिप्यते) लिप्त न हों।

भावार्थ-जगत् में शास्त्र-विहित कर्म करते हुए ही सौ वर्ष तक जीवित रहने की इच्छा करनी चाहिए। मनुष्य के लिए कर्मों में अलिप्त रहने का इसके अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग नहीं है। (शंकर भाष्य का अनुवाद)

वास्तव में पहले मन्त्र में बताया गया है कि संसार में जो कुछ भी चर-अचर पदार्थ हैं, उन सबको ईश्वर से आच्छादित कर लेना चाहिए। वास्तव में यह तो मुण्डकोपनिषद्, बृहदारण्यक आदि में पूर्व में ही बता दिया गया है कि जगत् की उत्पत्ति के बाद जगत्कर्त्ता ब्रह्म उसमें अनुप्रवेश कर गया। इससे उसके दो रूप हो गए। एक सत् रूप यह सृष्टि और त्यत् रूपी ब्रह्म का सृष्टि से बाहर का स्वरूप। सत् रूप सृष्टि से 'स' और त्यत् रूपी उच्छिष्ट भाग से 'त्य' लेने से ही 'सत्य' बनता है। केवल इस सृष्टि को जान लेने से ही सत्य को नहीं जाना जा सकता। इसी प्रकार ब्रह्म के केवल त्यत् रूप को जान लेने से भी सम्पूर्ण सत्य का बोध नहीं हो सकता। सत्य का पूर्ण ज्ञान तो सत् रूप सृष्टि और त्यत् रूपी ब्रह्म के सृष्टि से अलग हिस्से को जान लेने पर ही होता है। दूसरी बात त्यागपूर्वक भोग की कही है, फिर कहा गया है कि किसी के धन का लोभ मत कर। धन किसी का होकर नहीं रहता है।

दूसरे मन्त्र में कर्म करते हुए सौ वर्ष तक जीवित रहने की कामना की गई है। स्वामी शंकराचार्य प्रथम मन्त्र को संन्यासियों के लिए तथा दूसरा मन्त्र अज्ञानियों, अविद्या में ग्रस्त लोगों के लिए मानते हैं, परन्तु मन्त्रों में ऐसा कोई संकेत नहीं है। ज्ञान और कर्म एक-दूसरे के पूरक हैं, विरोधी नहीं हैं। स्वामी शंकराचार्य ज्ञान और कर्म में पर्वत जैसा विरोध मानते हैं, परन्तु वास्तव में ऐसा है नहीं। स्वामी जी ने भी तो ज्ञान कठिन कर्म करके ही प्राप्त किया था। फिर उस ज्ञान का उपयोग देश भर में घूम-घूम कर वैदिक-धर्म के प्रचार में किया था। ग्राम-ग्राम घूमना और शास्त्र-चर्चा करना कर्म ही तो है। फिर ईशावास्योपनिषद् के अगले श्लोक ९ से १४ तक के मन्त्रों में वे ज्ञान और कर्म के समुच्चय की बात भी करते हैं। अस्तु। अब हम देखेंगे कि ज्ञान और कर्म के समुच्चय से अमृतत्व कैसे

प्राप्त किया जाता है।

यजुर्वेद के ४० वें अध्याय के ९, १० व ११ मन्त्र असम्भूति और सम्भूति के विषय में हैं। यही मन्त्र उपनिषद् में १२, १३ व १४ वें श्लोक के रूप में हैं।

अन्धन्तमः प्र विशन्ति येऽसम्भूतिमुपासते।
ततोभूयऽइव ते तमो यऽउ सम्भूत्यां रताः।।

– यजुर्वेद ४०.९

पदार्थ– (ये) जो लोग (असम्भूति) अव्यक्त प्रकृति या कारणरूप प्रकृति की (उपासते) उपासना करते हैं (ते) वे (अन्धम्, तमः) न दिखने वाले अन्धकारमय लोक में (प्रविशन्ति) प्रवेश करते हैं। और (ये) जो (उ) लोग (सम्भूत्याम्) कार्यरूप प्रकृति, कार्य ब्रह्म (की उपासना में) (रताः) लगे रहते हैं (ते) वे (उ) वितर्क के साथ (तत्) उस से भी (भूयः) बढ़कर (इव) ही (तमः) अन्धकार में (प्रविशन्ति) प्रवेश करते हैं।

भावार्थ– जो लोग अव्यक्त प्रकृति की उपासना करते हैं वे घोर अन्धकार में प्रवेश करते हैं और जो लोग व्यक्त की उपासना करते हैं वे उससे भी गहरे अन्धकार में जाते हैं।

अन्यदेवाहुः सम्भवादन्यदाहुरसम्भवात्।
इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचचक्षिरे।। यजु. ४०.१०

अन्वयार्थ– (सम्भवात्) प्रकृति या कार्यरूप सृष्टि या कार्य ब्रह्म की उपासना का (अन्यत्) भिन्न (फलम्) फल (आहुः) कहते हैं। (असम्भवात्) अव्यक्त प्रकृति (या कारण ब्रह्म) की उपासना का (अन्यत्) भिन्न (एव) ही (आहुः) कहा गया है (इति) ऐसा हमने (धीराणाम्) ज्ञानी लोगों से (शुश्रुम) सुना है। (ये) जिन्होंने (नः) हमारे लिए (तत्) इसकी (विचचक्षिरे) व्याख्या की थी।

यहाँ स्वामी शंकराचार्य कारण प्रकृति या अव्यक्त प्रकृति को कारण ब्रह्म और कार्य प्रकृति अर्थात् व्यक्त प्रकृति या सृष्टि को कार्य ब्रह्म का नाम देते हैं, क्योंकि वे ब्रह्म के अतिरिक्त किसी की सत्ता स्वीकार नहीं करते हैं, परन्तु अव्यक्त और व्यक्त प्रकृति का नाम भी लेते हैं।

अगले मन्त्र में असम्भूति और सम्भूति को पूरक रूप में ही दिखाया है।

सम्भूतिं च विनाशं च यस्तद्वेदोभयंसह।
विनाशेन मृत्युं तीर्त्वा सम्भूत्यामृतमश्नुते।।

– यजु. ४०.११

अन्वयार्थ–(यः) जो व्यक्ति (असम्भूतिम्) अव्यक्त प्रकृति (कारण ब्रह्म) (च) तथा (विनाशम्) व्यक्त प्रकृति, कार्य-रूप प्रकृति सृष्टि (कार्य ब्रह्म) (च तत्) इन (उभयम्) दोनों को (सह) एक साथ (उपासना करने योग्य) (वेद) जानता है। वह (विनाशेन) व्यक्त प्रकृति, सृष्टि (कार्य ब्रह्म) की उपासना से (मृत्युम्) मृत्यु (तीर्त्वा) से पार होकर (असम्भूत्यां) कारण प्रकृति, अव्यक्त प्रकृति, (कारण ब्रह्म) की उपासना से (अमृतम्) मोक्ष को (अश्नुते) प्राप्त कर लेता है।

भावार्थ– जो असम्भूति अर्थात् कारण प्रकृति (कारण ब्रह्म) तथा सम्भूति अर्थात् व्यक्त प्रकृति (कार्य ब्रह्म) दोनों की साथ-साथ उपासना करता है, वह व्यक्त प्रकृति (कार्य ब्रह्म) की उपासना से मृत्यु को प्राप्त कर लेता है। यहाँ स्वामी शंकराचार्य अव्यक्त प्रकृति को कारण ब्रह्म और कार्य प्रकृति को कार्य ब्रह्म कहते हैं क्योंकि वे प्रकृति को ब्रह्म की माया कहते हैं, उसका अलग अस्तित्व स्वीकार नहीं करते हैं, जबकि स्वामी दयानन्द सरस्वती प्रकृति की स्वतन्त्र सत्ता स्वीकार कर अव्यक्त और व्यक्त प्रकृति को जानकर मोक्ष की सिद्धि की बात करते हैं।

अगले तीन मन्त्रों में ऐसे विद्या तथा अविद्या पर चर्चा की गई है।

अन्धन्तमः प्र विशन्ति येऽविद्यामुपासते।
ततोभूय इव ते तमो य उ विद्यायांरताः।।

– यजुर्वेद ४०.१२

अन्वयार्थ–(ये) जो लोग (अविद्याम्) कर्म की (उपासते) उपासना करते हैं (ते) वे (अन्धम्) न दिखने वाले (तमः) अन्धकार में (प्रविशन्ति) प्रवेश करते हैं और (ये उ) जो लोग (विद्यायाम्) विद्या, ज्ञान में (रताः) लगे रहते हैं (ते) वे (ततः) उससे भी (भूयः) बढ़कर (इव) ही (तमः) अन्धकार में (प्रविशन्ति) प्रवेश करते हैं। इस मन्त्र में स्वामी शंकराचार्य अविद्या का अर्थ कर्मकाण्ड और विद्या का अर्थ देवोपासना लगाते हैं जबकि स्वामी दयानन्द अविद्या का अर्थ उलटा ज्ञान अर्थात् अनित्य में नित्य, अनात्मा में आत्मा, जड़ में चेतन मानना तथा

विद्या का अर्थ तो सच्चा ज्ञान ही होता है। अगले मन्त्र में कहा गया है कि अविद्या और विद्या की उपासना के अलग-अलग फल हैं। विद्या और अविद्या के साथ-साथ अनुष्ठान का फल इस प्रकार है।

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयंऽसह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते।।

- यजु. ४०.१४

अन्वयार्थ-(यः) जो व्यक्ति (विद्याम्) ज्ञान (च) तथा (अविद्याम्) कर्म को (च) और (तत्) इन (उभयम्) दोनों को (सह) एक साथ (सम्पन्न करने योग्य) (वेद) जानता है वह (अविद्यया) कर्म के द्वारा (मृत्युम्) मृत्यु या आवागमन के चक्र को (तीर्त्वा) पार करके (विद्यया) ज्ञान के द्वारा (अमृतम्) मुक्ति को (अश्नुते) प्राप्त कर लेता है।

भावार्थ- जो व्यक्ति ज्ञान तथा कर्म दोनों को साथ-साथ करने योग्य मानता है वह कर्म के द्वारा मृत्यु को पार करके ज्ञान के द्वारा अमृत (मोक्ष) को पा लेता है। अब उपासना के द्वारा हम परमात्मा से ज्ञान के छिपे रहस्य को प्रकट करने की प्रार्थना करके विषय को विराम देते हैं।

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।
योऽसावादित्ये पुरुषः सोऽसावहम्। ओ३म् खं ब्रह्म।।

- यजु. ४०.१७

(हिरण्मयेन) स्वर्णिम (पात्रेण) पात्र वा ढक्कन से (सत्यम्) सत्य का (मुखम्) मुख या द्वार (अपिहितम्) ढंका हुआ (अस्ति) है। (यः) जो (असौ) वह (आदित्ये) सूर्य-मण्डल में (पुरुषः) पूर्ण परमात्मा है (सः) वह (असौ) परोक्षरूप (अहम्) मैं (खम्) आकाश के तुल्य व्यापक (ब्रह्म) सबसे अधिक हूँ। (ओ३म्) सबका रक्षक मैं (ओ३म्) ऐसा (मेरा) नाम जानो। इति शुभम्।

विशेष सूचना

परोपकारी-पत्रिका के सभी पाठकों एवं आर्यजनों से निवेदन है कि डॉ. धर्मवीर जी से सम्बन्धित कोई पत्र, चित्र, ऑडियो, वीडियो आदि आपके पास हों तो कृपया हमें सूचित करें।

डॉ. धर्मवीर जी के जीवन पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका के लिए जिन भी महानुभावों के पास उनसे सम्बन्धित कोई भी संस्मरण, विचार या कविता आदि हों, वे भी अतिशीघ्र सभा को भेजने का कष्ट करें, ताकि आपके लेख स्मारिका में प्रकाशित किये जा सकें।

सम्पर्क सूत्र- ०९४६०४२११८३, ०१४५-२४६०१६४

ई-मेल-psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, दयानन्द आश्रम, केसरगंज,

अजमेर-३०५००१ (राज.)

जैसे वेद के वेत्ता विद्वान् लोग वेदानुकूल मार्ग से परमेश्वर को जानकर उत्तम ज्ञान से उसका सेवन करते हैं, वैसे ही जगदीश्वर सब को उपासनीय अर्थात् सेवन करने के योग्य है, वैसे ज्ञान के विना ईश्वर की उपासना कभी नहीं हो सकती क्योंकि विज्ञान ही उसकी अवधि है। **- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४१**

सब व्यवहार करने वालों को चाहिये कि जो मनुष्य जिस काम में चतुर हो उसको उसी काम में प्रवृत्त करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.२०

वैचारिक क्रान्ति हेतु सत्यार्थप्रकाश व ऋषि जीवन-चरित्र प्रचार-प्रसार की भव्य योजना

विचार किसी भी देश, समाज व जाति की अमूल्य निधि (सम्पत्ति) है। जिसके पास में श्रेष्ठ विचार नहीं या फिर विचार को फैलाने के साधन नहीं हैं या फिर जो व्यक्ति, समाज व राष्ट्र अपने विचारों की अवहेलना करते रहते हैं, उनका अस्तित्व भी एक दिन समाप्तप्राय: हो जाता है। आज हर सम्प्रदाय, समाज, समूह व देश अपने विचारों का प्रचार-प्रसार बड़ी प्रबलता से हर क्षेत्र में व हर साधन से कर रहा है, लेकिन काफी समय से आर्यसमाज में वैचारिक शिथिलता देखी जा रही है। इस शिथिलता को दूर करने का मात्र एक ही उपाय है कि हम सभी आर्यजन ऋषि दयानन्द सरस्वती कृत **अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश व ऋषि जीवन चरित्र का प्रचार नये शिक्षित लोगों में करें।** इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर सभा के माध्यम से विश्व पुस्तक मेला दिल्ली में वर्ष २०१४ से लगातार इन ग्रन्थों का नि:शुल्क वितरण किया जा रहा है।

सत्यार्थप्रकाश ही क्यों?-१. यदि कोई व्यक्ति, समाज, समूह, संस्था या राष्ट्र एक ग्रन्थ (पुस्तक) पढ़कर विस्तृत ज्ञान प्राप्त करना चाहे तो यह सत्यार्थप्रकाश से ही सम्भव है। २. आज के दूषित वातावरण में वैदिक वाङ्मय को ठीक-ठीक जानने हेतु, पढ़ने-पढ़ाने हेतु प्रथम सत्यार्थप्रकाश और महर्षि के अन्य ग्रन्थों को पढ़ना-जानना अत्यन्त आवश्यक है। ३. दर्शनशास्त्र, इतिहास, भारतीय-परम्परा, कर्त्तव्य, धर्म-अधर्म, उचित-अनुचित, न्याय-अन्याय, सत्य-असत्य तथा मानवता आदि क्या हैं? - यह सारी जानकारी सत्यार्थप्रकाश से प्राप्त होती है। ४. पाखण्ड, कुरीतियों व बुराइयों का नाश भी सत्यार्थप्रकाश से सम्भव है। ५. सत्यार्थप्रकाश व ऋषि के अन्य ग्रन्थों की उपस्थिति में कोई विधर्मी अपनी शेखी नहीं मार सकता तथा किसी भी हिन्दू को बहकाकर विधर्मी नहीं बना सकता। ६. सत्यार्थप्रकाश के प्रभाव ने न जाने कितनों का जीवन ही बदल डाला। सत्यार्थप्रकाश के जोड़ की दूसरी पुस्तक दुर्लभ है, जिसमें ज्ञान का अमूल्य खजाना भरा पड़ा है। इसलिए इसका प्रचार-प्रसार अनिवार्य है। **योजना का विवरण निम्न प्रकार का होगा-१. सत्यार्थप्रकाश (हिन्दी में)** आकार लगभग ६०० पृष्ठ व साइज डिमाई आकार में होगा। लागत मूल्य १००/- रुपये प्रति पुस्तक। **२. ऋषि जीवन चरित्र (हिन्दी में)** लगभग १६४ पृष्ठ व साईज डिमाई आकार में। लागत मूल्य ६०/- रुपये प्रति पुस्तक। **३. महर्षि द्वारा रचित पुस्तक आर्याभिविनय (हिन्दी में)** ६४ पृष्ठ व साइज डिमाई आकार में, लागत मूल्य ३०/- रु. प्रति पुस्तक।

नोट-यह साहित्य वैचारिक क्रान्ति के लिए व वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार के लिए गैर आर्यसमाजी सज्जनों व संस्थानों आदि को नि:शुल्क या अल्प मूल्य में वितरित किया जायेगा। साहित्य का ठीक-ठीक उपयोग हो व योग्य, शिक्षित, विचारवान् व्यक्तियों तथा संस्थानों तक पहुँचे इसके लिए वितरण व्यवस्था की जाएगी। योग्य प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं का चयन कर कार्य में नियुक्त किया जायेगा। प्रत्येक व्यक्ति, संस्था आदि से एक फार्म भरवाया जायेगा, जिसमें उनका पूर्ण पता, सम्पर्क आदि हो, जिससे भविष्य में परिणाम का मूल्यांकन किया जा सके। ग्रन्थों की प्रामाणिकता, शुद्धता व साज-सज्जा तथा सुन्दरता का विशेप ध्यान रखा जायेगा। इस प्रचार-प्रसार योजना का उद्देश्य सत्यार्थप्रकाश व महर्षि के जीवन-चरित्र के प्रचार-प्रसार के माध्यम से मानव मात्र का कल्याण करना है। यह प्रचार-प्रसार मुख्य रूप से शिक्षित गैर आर्यसमाजी लोगों के लिए होगा। यह कार्य पूर्णरूप से महर्षि के मन्तव्यों के अनुरूप हो इसका विशेष ध्यान रखा जायेगा। इस कार्य की सफलता के लिए सभी आर्यजनों से, समाजों से व संस्थानों से निवेदन है कि इस महान् कार्य में तन-मन-धन से अपना सहयोग करने व अपने इष्ट मित्रों को भी सहयोग करने की प्रेरणा करें।

नोट-अपना आर्थिक सहयोग आप परोपकारिणी सभा अजमेर के नाम प्रेषित करते समय **सत्यार्थप्रकाश प्रचार-प्रसार शीर्षक** अवश्य लिखें। धन प्रेषित करने हेतु आप चैक, ड्राफ्ट व सीधे राशि सभा के बैंक खाते में जमा करवाकर जमा पर्ची की प्रतिलिपि प्रेषित कर देवें या फिर ईमेल, दूरभाष द्वारा सूचित कर सकते हैं। धन्यवाद।

खाता धारक का नाम-**परोपकारिणी सभा, अजमेर।**

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**

बैंक खाता संख्या-**10158172715**

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आइ**, पावर हाऊस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।

बैंक खाता संख्या-**091104000057530**

IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

नोट : इस योजना हेतु दिया गया दान आयकर की धारा ८० जी के अन्तर्गत कर मुक्त होगा।

सम्पर्क : मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

शंङ्का - समाधान

प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

ऋषि की जन्म तिथि- मेरठ निवासी स्वाध्यायशील आर्य बन्धु श्रीयुत् सत्यपाल सिंह जी ने माननीय डॉ. दिनेश शर्मा जी को पत्र लिखकर महर्षि के जन्म के वर्ष के सन् का प्रश्न उठाते हुये लिखा है कि ऋषि विक्रम संवत् १८८१ में जन्मे थे और नवीनतम खोज के अनुसार आर्यसमाज १२ फरवरी (फाल्गुन) को उनकी जन्मतिथि मानता है तो फिर जन्म का वर्ष सन् १८२५ नहीं सन् १८२४ होना चाहिये।

यह आनन्ददायक बात है कि परोपकारी द्वारा चलाये गये आन्दोलन के परिणाम-स्वरूप पाठक ऋषि-जीवन तथा आर्य सिद्धान्तों पर चिन्तन करते हैं। अपनी शंकायें परोपकारी को भेजते हैं। सभा के विद्वान् मान्य सम्पादक डॉ. दिनेश जी के दिशा-निर्देश से सप्रमाण शंकाओं का सप्रमाण समाधान करते रहते हैं।

सत्यपाल सिंह जी का प्रश्न अच्छा है। हमारा निवेदन है कि महर्षि जी ने अपनी जन्म तिथि तो न लिखी और न बताई। जन्म का संवत् लिखित रूप में संवत् १८८१ बताया। प्रचलित परम्परा के अनुसार जीवनी लेखकों ने इसमें से ५७ वर्ष घटाकर ईस्वी सन् १८२४ उनका जन्म का वर्ष मान लिया।

आर्य नेताओं ने गम्भीर विचार-विमर्श करके सन् १९२५ में महर्षि की जन्म शताब्दी मनाई तो एतद्विषयक संशय का पर्याप्त निवारण हो गया। अब इसे विवाद का विषय बनाने से बुद्धिभेद होगा। इससे हानि ही होगी, लाभ कुछ भी नहीं।

एक शताब्दी से अधिक समय हो गया लाला जीयालाल जी जैनी ने द्वेषवश ऋषि के जन्म की तिथि व कुल विषयक एक गन्दी पुस्तक 'दयानन्द छल-कपट दर्पण' लिखी। सब विरोधियों ने इसे बहुत उछाला। यह व्यक्ति ज्योतिषी था। इसने ऋषि जी की नकली जन्मपत्री बनाकर यह दुष्प्रचार किया कि यह मुझे गुजरात से प्राप्त हुई। इस झूँठ की पूज्य लक्ष्मण जी तथा सनातन धर्मी विद्वान् पं. गंगाप्रसाद जी शास्त्री ने तत्काल पोल खोल दी। पत्री गुजराती में न होकर हिन्दी में थी। झूँठ के पाँव नहीं होते।

इसी जाली नकली पत्री का लाभ भोपाल के नास्तिक आदित्यपाल सिंह ने उठाया। हमने मान्यवर ज्वलन्तकुमार जी की इसी विषय की खोजपूर्ण पुस्तक में जीयालाल जी की पत्रिका छपवा दी और प्राक्कथन में सिद्ध कर दिया कि यह कोई खोज नहीं, विशुद्ध चोरी व धोखाधड़ी है। हमने '**महर्षि दयानन्द सरस्वती: सम्पूर्ण जीवन-चरित्र' के प्रथम** भाग के पृष्ठ ५८ की पाद टिप्पणी में आदरणीय ज्वलन्त जी की खोजपूर्ण पुस्तक के प्रयोजन व निष्कर्ष की पुष्टि करते हुये लिखा है कि इससे महर्षि की जन्मतिथि, वर्ष, कुल परिवार व जन्म-स्थान विषयक सब प्रकार के विषैले प्रचार का निराकरण होगा।

प्रबुद्ध पाठक ध्यान दें कि द्वेषी लाला जीयालाल ने ऋषिवर का गुणगान करते हुये उन्हें महाप्रतापी व जाति रक्षक भी स्वीकार किया। इस पुस्तक के **दूसरे संस्करण का भी यही नाम था।** इसकी एक दुर्लभ प्रति हमने परोपकारिणी सभा को भेंट कर दी है। सत्यपाल जी के प्रश्न से सबका लाभ होगा। अभी-अभी श्री यतीन्द्र आर्य जी बालसमन्द समाज हरियाणा ने हमें कहा, ''आपने ऋषि जीवन में ऋषि जीवन पर किये जाने वाले प्रत्येक वार प्रहार का सप्रमाण उत्तर दे दिया है। यह इस ग्रन्थ की विशेषता है। सत्यपाल जी से प्रेरणा प्राप्त कर हमारी नई पीढ़ी को भी एक-एक आक्षेप का उत्तर देना सीखना होगा।''

जैसे वेद के वेत्ता विद्वान् लोग वेदानुकूल मार्ग से परमेश्वर को जानकर उत्तम ज्ञान से उसका सेवन करते हैं वैसे ही जगदीश्वर सब को उपासनीय अर्थात् सेवन करने के योग्य है, वैसे ज्ञान के विना ईश्वर की उपासना कभी नहीं हो सकती क्योंकि विज्ञान ही उसकी अवधि है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एकमात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रात: एवं सायं दैनिक यज्ञ- प्रवचन, वेद-पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***- आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति नि:शुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***- अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्णरूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था नि:शुल्क की जाती है। ***गोशाला***- गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का नि:शुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***- वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा नि:शुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। *विशाल पुस्तकालय*- इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोधकर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ नि:शुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। *व्यायामशाला*- योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में नि:शुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों में भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युक्त पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि लगभग पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाखे जलाकर व्यय करते हैं, असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थित होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अत: आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता

(१६ से ३१ मई २०१७ तक)

१. गौरव मिश्रा, अजमेर २. श्रीमती वीणा त्यागी, नई दिल्ली ३. स्वस्तिकाम चैरिटेबल ट्रस्ट, अमरावती ४. श्री एस.के. कोहली, दिल्ली ५. श्री रामवीर चुग, पंचकुला ६. श्री हर्षय सिंह गंगवार, बरेली ७. सुश्री यशोदा रानी सक्सेना, कोटा ८. श्रीमती दीप्ति गुप्ता, पंचकुला ९. श्री मेजर रतन सिंह यादव, जखाला रेवाड़ी १०. श्री मुरलीधर मोहनलाल छापरवाल व श्रीमती भगवती देवी छापरवाल, अजमेर ११. श्री ओमप्रकाश ईनाणी, अजमेर १२. श्री देवेन्द्र सिंह, अजमेर १३. श्री गौतम कुमार पाल, सिक्किम १४. श्री तेजनारायण, पीलीभीत १५. श्रीमती कमला देवी बद्री प्रसाद पंचोली, अजमेर १६. श्रीमती कौशल्या देवी, बीकानेर १७. श्री आनन्द मुनि, हिसार १८. श्रीमती सोम, अजमेर १९. श्रीमती सूर्यकिरण आर्य, जोधपुर।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि-उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला की गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में नि:शुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले, इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चैक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि-उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(१६ से ३१ मई २०१७ तक)

१. श्री एस. के. कोहली, दिल्ली २. श्रीमती कमला देवी राणा, जम्मू कश्मीर ३. श्रीमती कमला देवी, मुजफ्फरनगर ४. श्रीमती कान्ति देवी, अजमेर ५. श्री अनीश, अजमेर ६. श्रीमती सोनम व श्री अभय शर्मा, अलवर ७. श्रीमती कमला देवी बद्रीप्रसाद पंचोली, अजमेर ८. श्रीमती कौशल्या देवी, बीकानेर।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

पाठकों की प्रतिक्रिया

१. माननीय सम्पादक जी, सादर नमस्ते। यह देखकर प्रसन्न हूँ कि आपने परोपकारी (पाक्षिक) के प्रकाशन में डॉ. धर्मवीर के बाद स्तर में कोई न्यूनता नहीं आने दी है। आपके सम्पादकीय लेख भी सामयिक होने के साथ-साथ ज्ञान से परिपूर्ण होने से पाठकों को सहज ही आकर्षित कर रहे हैं। परोपकारी में डॉ. धर्मवीर से सम्बन्धित रचनाओं को भी उचित स्थान प्राप्त हो रहा है।

- शिवनारायण उपाध्याय, कोटा।

२. आदरणीय श्री दिनेश जी,

सादर नमस्ते। आचार्य डॉ. धर्मवीर जी वर्ष २००४-०५में मुम्बई में मेरे विलेपार्ले, (पश्चिम) स्थित कार्यालय में आये थे तब उनके साथ मिलने और बातचीत करने का सौभाग्य मिला। गजब के इन्सान थे अद्वितीय, अनोखे। प्रतिभा और विद्वत्ता का तो कोई सानी नहीं। उन्होंने मेरे जयपुर के पते पर दिसम्बर २००५ से परोपकारी भेजना आरम्भ किया। तब से पत्रिका नियमित आ रही है। पत्रिका नियम से पूरी पढ़ता हूँ। डॉ. धर्मवीर जी से कई बार फोन पर बात भी की। पर अब वे स्मृतियाँ ही शेष हैं। चन्दा नहीं भेजता हूँ फिर भी पत्रिका आ रही है। हाँ, कभी-कभी कुछ दानराशि भेजता रहता हूँ।

- वेदप्रकाश आर्य, जयपुर।

३. परोपकारिणी सभा दयानन्द आश्रम, केसरगंज अजमेर राज. के परोपकार का ज्ञान के क्षेत्र में पत्रिका द्वारा जो लाभ प्राप्त हुआ, इसके लिये आर्यसमाज, ईकाई तेराजाकेट-हमेशा ऋणी रहेगी।

- वी.शंकर अवस्थी, ऑडीटर-आर्यसमाज ईकाई तेराजाकेट, कन्नौज, उ.प्र.।

संस्था - समाचार

आर्यवीर दल शिविर का आयोजन- २१ मई रविवार सायं ४ बजे सरस्वती भवन के सभागार में आर्यवीर दल चरित्र-निर्माण शिविर का अन्तिम सत्र हुआ, जिसमें छात्रों के अभिभावकों से भी चर्चा की गई। शाम ६ बजे प्रांगण में व्यायाम प्रदर्शन आरम्भ हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में अजमेर के कलेक्टर श्री गौरव गोयल एवं डी.आर.एम. श्री पुनीत चावला ऋषि उद्यान पधारे। परोपकारिणी सभा की ओर से श्री ओममुनि, श्री सुभाष नवाल, श्रीमती ज्योत्स्ना 'धर्मवीर' ने अतिथियों का स्वागत किया। शिक्षक श्री सुशील शर्मा, श्री अभिषेक, श्री जीवन के मार्गदर्शन में संगीत के साथ आर्यवीरों द्वारा सूर्य नमस्कार, रस्से पर आसन, लाठी चलाना, मानव पुल निर्माण, मानव रथ निर्माण, मानव स्तूप निर्माण, जूडो-कराटे, मलखम्भ, योगासन आदि का प्रदर्शन हुआ। २५ आर्यवीरों ने इसमें भाग लिया। नगर से आये दर्शकों व आर्यवीरों के अभिभावकों ने बड़े उत्साह से कार्यक्रम का आनन्द लिया। कार्यक्रम का संचालन आर्यवीर दल के जिला संचालक श्री विश्वास पारीक ने किया।

परोपकारिणी सभा एवं आर्यवीर दल, अजमेर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस शिविर में सात दिन तक छात्रों ने यज्ञ-सन्ध्या के साथ-साथ स्वास्थ्य, चरित्र व वैदिक धर्म की भी शिक्षा ग्रहण की। बौद्धिक ज्ञान डॉ. दिनेशचन्द्र शर्मा, श्रीमति ज्योत्स्ना 'धर्मवीर', आचार्य सत्यजित् आर्य, आचार्य कर्मवीर आर्य, आचार्य सत्येन्द्र आर्य, श्री रमेश मुनि, डॉ. ज्ञानप्रकाश जांगिड़ एवं डॉ. प्रशान्त शर्मा ने प्रदान किया।

शारीरिक प्रशिक्षण में सहयोग श्री मानसिंह, श्री पीयूष, श्री आशीष, श्री प्रणव व श्री सनी ने दिया।

आर्यवीरांगना दल शिविर सम्पन्न- रविवार २८ मई को सायंकाल यह शिविर प्रारम्भ हुआ। परोपकारिणी सभा की सदस्य श्रीमती ज्योत्स्ना 'धर्मवीर' ने ध्वजारोहरण कर शिविर का प्रारम्भ किया। कार्यक्रम का संचालन आर्यवीर दल के जिला संचालक श्री विश्वास पारीक ने किया। इस शिविर में आचार्या आदेश, श्रीमती कुमुदिनी, श्रीमती उषा ने समस्त व्यवस्था का कार्यभार श्रीमती ज्योत्स्ना 'धर्मवीर' के निर्देशन में सम्भाला। शिविर में अजमेर, राजस्थान के अन्य स्थानों, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, दिल्ली तथा हरियाणा की ७५ बालिकाओं एवं युवतियों ने भाग लिया। आर्य वीरांगनाओं को जूडो-कराटे, आसन-प्राणायाम, व्यायाम प्रशिक्षण देने के लिए दिल्ली से श्रीमती अभिलाषा आर्या-मुख्य व्यायाम शिक्षिका, अन्य शिक्षिकाओं में अजमेर से सुश्री दीपमाला, सुश्री ज्योति वैदिक, सुश्री रुचि, सुश्री शुचि रहीं। बौद्धिक श्रीमती ज्योत्स्ना 'धर्मवीर', आचार्य कर्मवीर, आचार्या आदेश, श्री रमेश मुनि, श्री मुमुक्षु मुनि तथा सुश्री विजय लक्ष्मी ने प्रदान किया

जन्मदिवस - ऋषि उद्यान की यज्ञशाला में २१ मई को श्री वासुदेव की सुपुत्री सूर्यकिरण ने अपने जन्मदिवस के अवसर पर अतिथि यज्ञ के होता के रूप में आहुतियाँ दीं। संन्यासियों, विद्वानों तथा सभी आश्रमवासियों ने उन्हें आशीर्वाद प्रदान किया। परोपकारिणी परिवार की ओर से उनकी दीर्घ आयु की प्रार्थना करते हुए हार्दिक शुभकामनाएँ।

युवा चरित्र निर्माण शिविर- मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के जमानी गाँव में परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित आश्रम में १ से ७ मई २०१७ तक सात-दिवसीय युवा चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में आस-पास के गाँव के लगभग ४५ छात्रों ने भाग लिया। शिविर का संचालन आश्रम-व्यवस्थापक आचार्य सत्यप्रिय आर्य ने किया। छात्रों को शारीरिक शिक्षा श्री निरंजन आर्य व बौद्धिक शिक्षा तथा वैदिक सिद्धान्तों का ज्ञान आचार्य कर्मवीर व श्री देवमुनि वानप्रस्थी ने प्रदान किया। शिविर में एक युवा-भागवताचार्य श्री विवेकानन्द तिवारी ने भी वैदिक धर्म की शिक्षा प्राप्त की। आयोजन का समापन ७ मई को किया गया। कार्यक्रम में जमानी गाँव के ही श्री हेमन्त दुबे व सुभाष दुबे का सराहनीय सहयोग रहा।

यज्ञ एवं सत्संग- प्रात:कालीन प्रवचन में ऋग्वेद के मन्त्रों की व्याख्या करते हुए **आचार्य सत्यजित् जी** ने

बताया कि वेद में अध्यापक और उपदेशक के लिए निर्देश दिये गये हैं। अध्यापक और उपदेशक का समाज में वही महत्त्व है, जो शरीर में प्राण और उदान का है। जैसे प्राण के बिना शरीर नहीं चल सकता वैसे ही विद्वानों के बिना समाज को सही दिशा नहीं मिल सकती।

रविवारीय प्रात:काल प्रवचन में आचार्य जी ने कहा कि सबसे बड़ा राजा परमात्मा है उसने भी हम मनुष्यों के लिए बहुत से उपदेश दिया हैं। उनका भी नियम हम सब पर लागू होता है। उसी ने हमें जीवन दिया है।

प्रात:कालीन प्रवचन में **स्वामी मुक्तानन्द जी** ने कहा कि मनुष्य अपने सभी कार्य संस्कारों से प्रेरित होकर करता है। जिस मनुष्य के जैसे संस्कार होते हैं, वह वैसे ही कार्य करता है। जिस कार्य के संस्कार हमारे अन्दर नहीं होते उसे हम नहीं कर पाते। ये संस्कार कैसे बनाये जाते हैं और कैसे नष्ट किये जाते हैं, इसका योग-दर्शन में विस्तार से वर्णन है।

प्रात:कालीन प्रवचन में **आचार्य सोमदेव जी** ने कहा कि द्विजों में उत्तम ब्राह्मण के लिए वेद पढ़ना सबसे बड़ा कर्तव्य, सबसे बड़ा तप है। मनु महाराज के अनुसार पढ़ना-पढ़ाना, यज्ञ करना-करवाना, दान देना-लेना ब्राह्मण के कर्म हैं। स्वार्थ के कारण तथाकथित ब्राह्मणों ने दूसरों को वेद पढ़ाना बन्द कर दिया। जिसके कारण अन्य लोगों ने भी पञ्च महायज्ञ करना छोड़ दिया और हमारा यह आर्यावर्त्त देश अवनत होता चला गया।

प्रात:कालीन प्रवचन के क्रम में **आचार्य कर्मवीर जी** ने कहा कि परोपकार मनुष्यता को बढ़ाता है और स्वार्थवृत्ति पशुता को। जैसे गाय अपने तुरन्त जन्मे बछड़े को प्रेम करती है वैसे ही मनुष्यों को एक-दूसरे की रक्षा और उन्नति के लिए प्रयास करना चाहिये। त्याग का सबसे बड़ा स्वरूप यज्ञ है, जिसमें इदन्न मम-यह मेरा नहीं है की भावना से आहुति दी जाती है।

सभा मंत्री **श्री ओममुनि जी** ने कहा कि इतिहास में श्री रामचन्द्र जी बहुत प्रसिद्ध महापुरुष हुए हैं, जिनका जीवन चरित्र महर्षि वाल्मीकि जी ने लिखा था। नौ लाख वर्ष बाद भी उनका जीवन चरित्र स्त्री-पुरुषों में समान रूप से लोकप्रिय है।

सोमवार से शुक्रवार तक सायंकालीन सत्संग में 'उपदेश मंजरी' पुस्तक का पाठ एवं चर्चा होती है। महर्षि दयानन्द जी ने पूना में इतिहास के अन्तर्गत महाभारत के अनेक प्रसंग सुनाये थे। उसी का पाठ करते हुए **उपाचार्य सत्येन्द्र जी** ने बताया कि वेदोक्त मर्यादाओं के उल्लंघन के कारण महाभारत युद्ध हुआ। कौरवों के अभिमान और द्वेष के कारण पाण्डवों से उनका वैर बढ़ता चला गया। भीष्म अपने वचन से बंधे थे इसलिए वे कौरवों के विरोध में नहीं बोले, जबकि वे जानते थे कि पाण्डवों के साथ अन्याय हो रहा है।

प्रात:कालीन प्रवचन में **ब्र. रविशंकर जी** ने कहा कि जो ऊँची स्थिति के साधक होते हैं जिन्होंने बहुत काल से योगाभ्यास किया हो, वे प्रतिपक्ष भावना करने का उपदेश करते हैं। संस्कारों को क्षीण करने, विवेक प्राप्त करने के जितने उपाय हैं, उनमें प्रतिपक्ष भावना करना सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है।

सायंकालीन प्रवचन में **ब्र. मनोज जी** ने कहा कि राम, कृष्ण, हनुमान जैसे महापुरुष का निर्माण वैदिक शिक्षा प्रणाली से ही होता है। जैसे सोने को तपाने से उसकी चमक बढ़ जाती है वैसे ही वैदिक संस्कारों से मनुष्य का जीवन ऊँचा उठता है और वह धार्मिक बनता है।

जब तक सब की रक्षा करने वाला धार्मिक राजा वा आप्त विद्वान् न हो तब तक विद्या और मोक्ष के साधनों को निर्विघ्नता से पाने के योग्य कोई भी मनुष्य नहीं होता है और न मोक्षसुख से अधिक कोई सुख है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५२

इस बात का निश्चय है कि ब्रह्मचर्य्य, उत्तम शिक्षा, विद्या, शरीर और आत्मा का बल, आरोग्य, पुरुषार्थ, ऐश्वर्य, सज्जनों का संग, आलस्य का त्याग, यम-नियम और उत्तम सहाय्य के विना किसी मनुष्य से गृहाश्रम धारा जा नहीं सकता।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.३१

पाठकों की प्रतिक्रिया

१. माननीय सम्पादक महोदय, मैंने अप्रैल मास प्रथम परोपकारी की पत्रिका में पहली बार आपका सम्पादकीय लेख पढ़ा, बड़ा ही वर्तमान की समस्या को लेकर आपके विचार प्रकट किए, इसीलिए आप धन्यवाद और बधाई के पात्र हैं।

एक संस्मरण- बात सितम्बर २०१० की है, आर्यसमाज सैक्टर १३ अर्बन स्टेट करनाल का वार्षिक उत्सव था। आचार्य धर्मवीर जी को मुख्य वक्ता के रूप में निमन्त्रण था। वह यहाँ पर ७ दिन लगभग रहे। जब अजमेर से करनाल के लिए रवाना हुए। गाड़ी रात को लगभग १२ बजे पहुँची। उन्होंने किसी अधिकारी को कानो-कान नहीं बताया। एक अपरिचित स्थान पर स्वयं रिक्शा करके रात्रि को आर्यसमाज पहुँचे, अधिकारी बहुत हैरान। यह एक बहुत बड़े व्यक्तित्त्व का हमारे सामने बहुत बड़ा आदर्श था। इससे यह झलकता है कि उनमें किसी प्रकार के न पद का अहम् था और न विद्वत्ता का। ऐसे नम्र स्वभाव, जल के समान शीतल थे। परिश्रम की झलक यह थी कि एक दिन भी आराम नहीं किया। कभी वकीलों को, कभी विद्यालयों में उनका प्रवचन होता था और काफी मात्रा में परोपकारी पत्रिका के सदस्य बनाकर भी गए। मैं उनको देहरादून मानव-कल्याण केन्द्र कन्या गुरुकुल में मिली, जब कभी कुरुक्षेत्र आते तो राजेन्द्र जी वेदालंकार मुझसे अवश्य फोन पर बात करवाते थे। ऐसे व्यक्तित्त्व के जाने से हमें बहुत ही क्षति हुई, जिसकी भरपाई करना कठिन हीं नहीं बल्कि असम्भव भी है।

- सावित्री आर्य, करनाल, हरियाणा

२. माननीय सम्पादक जी, सादर नमस्ते।

यह देखकर प्रसन्न हूँ कि आपने परोपकारी पाक्षिक के प्रकाशन में डॉ. धर्मवीर जी के बाद स्तर में कोई न्यूनता नहीं आने दी है। आपके सम्पादकीय लेख भी सामयिक होने के साथ-साथ ज्ञान से परिपूर्ण होने से पाठकों को सहज ही आकर्पित कर रहे हैं। परोपकारी में डॉ. धर्मवीर से सम्बन्धित रचनाओं को भी उचित स्थान प्राप्त हो रहा है।

- शिवनारायण उपाध्याय, ७५, शास्त्री नगर, दादाबाड़ी, कोटा

३. माननीय परोपकारी पत्रिका के सम्पादक जी, सादर नमस्ते! मैंने २०१२ सन् में जून के महीने में परोपकारिणी सभा में आकर एक हफ्ते तक योग साधना शिविर में ध्यान सीखा था। तब से सभा द्वारा उदालगुरी आर्यमाज के नाम परोपकारी पत्रिका नि:शुल्क भेजी जा रही है। तभी से मैं उस पत्रिका का नियमित पाठक हूँ। सभा को हम लोग धन्यवाद ज्ञापन करते हैं। सभा में रहते समय मैंने डॉ. धर्मवीर जी से यज्ञोपरान्त वेद प्रवचन सुना था।

डॉ. धर्मवीर जी तो अब नहीं रहे, फिर भी वे हमारे में अमर हैं। जन्म-मृत्यु सम्बन्ध में आदमी का कुछ भी हक नहीं है। **'जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः'** उनको परलोक में शान्ति मिले, हम यही कामना कर सकते हैं और कुछ नहीं।

शर्मा जी! डॉ. धर्मवीर जी के बाद परोपकारी का सम्पादन कार्य आप से हो रहा है, अति प्रसन्नता का विषय है, क्योंकि इस पत्रिका के मानदण्ड में तनिक भी फरक नहीं दिखाई देना, इसी बात का सूचक है कि **भविष्य में भी पाठकगण सर्वोत्कृष्ट पत्रिका का पाठ करने में समर्थ होंगे, यही सूचित होता है।**

आपने सम्पादकीय आदि में भी स्वर्गीय धर्मवीर जी को छोड़ा नहीं है, प्रशंसनीय है। प्रत्येक अंक में उनका कुछ न कुछ लेखन होता ही है। यह प्रशंसा की बात है। मेरी नजर में पत्रिका उत्कृष्टता की ओर अग्रसर हो रही है। हम उदालगुरी आर्यसमाज की ओर से आपकी दीर्घायु की कामना करते हैं। **'भगवता यत् विधीयते तन्मङ्गलाय'।**

- रुद्र शास्त्री, ग्रा.- गोलमागाउँ, पो.जि.- उदालगुरी, आसाम

४. मधुर स्मृति- (सन्दर्भ- परोपकारी माह अप्रैल द्वितीय-२०१७) एक विशाल व्यक्तित्व के धनी डॉ. धर्मवीर- यह नाम मैंने पूर्व में सुन रखा था, परन्तु उनके दर्शन की ललक मन में थी। ग्रीष्मावकाश में डॉक्टर जी से मिलने की अभिलाषा से अजमेर आया, परन्तु उनके कार्यक्रम अन्यत्र होने के कारण उनके दर्शन का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ। आर्यसमाज रेलवे कॉलोनी, कोटा द्वारा अप्रैल २००१ में नवनिर्मित यज्ञशाला के उद्घाटन पर उनसे पहली बार भेंट हुई। उनके सान्निध्य में नवनिर्मित वेदी पर यज्ञमान बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। डॉ. धर्मवीर जी की वाणी सुनकर मैं आह्लादित हुआ। उनकी दोपहर की भोजन व्यवस्था मेरे निवास पर ही थी। उनका परोपकारी सभा के लिए समर्पण, प्रेरणा, इच्छाशक्ति, अनुभव, ज्ञान एवं स्नेहिल स्वभाव आज भी मेरे लिए प्रेरणास्रोत है।

जून २००७ में योग साधना शिविर (७ दिवसीय) ऋषि उद्यान, अजमेर में जाने का सुअवसर प्राप्त हुआ। नित्य हवन के पश्चात् उनसे वेद-मन्त्रों की व्याख्या सुनकर मन प्रफुल्लित हो जाता था। भेंट के दौरान उन्होंने मुझसे कोटा की सभी आर्यसमाजों के कर्मठ आर्यसमाजियों के बारे में जानकारी ली। उनका व्यवहार इतना सरल, सहज था कि लगा मानों बरसों पुराने किसी मित्र से बातचीत कर रहा हूँ। आज डॉक्टर जी हमारे बीच नहीं रहे, परन्तु उनकी मधुर स्मृति आज भी मेरे हृदय-पटल पर अंकित है।

- प्रेमसिंह परिहार, आर्यसमाज रेलवे कॉलोनी, कोटा, राज.

परोपकारिणी सभा, अजमेर के तत्त्वावधान में
१३४ वाँ ऋषि बलिदान समारोह

दिनांक २७, २८, २९ अक्टूबर २०१७, शुक्र, शनि, रविवार

महापुरुषों का यज्ञमय जीवन हमको प्रत्येक कदम पर प्रेरणा व मार्गदर्शन देता रहता है, जिस कारण हम उनके ऋणी हो जाते हैं। इस ऋण से मुक्त होने का एक ही उपाय है- महापुरुषों की विचारधारा का यथासामर्थ्य प्रचार-प्रसार। विराट व्यक्तित्त्व महर्षि दयानन्द की समग्र मानव जाति ऋणी है। इस ऋण को चुकाने का स्वर्ण-अवसर ऋषि के १३४वें बलिदान वर्ष के उपलक्ष्य में हमको प्राप्त हुआ है। इस अवसर पर परोपकारिणी सभा भव्य समारोह का आयोजन करने जा रही है।

ऋग्वेद पारायण यज्ञ- 'ऋग्वेद पारायण यज्ञ' की पूर्णाहुति बलिदान समारोह के अन्तिम दिन २९ अक्टूबर को प्रात: १० बजे होगी। यज्ञ के ब्रह्मा श्री सत्यानन्द वेदवागीश होंगे। यह यज्ञ ऋषि-उद्यान अजमेर की यज्ञशाला में सम्पन्न होगा।

वेदगोष्ठी - प्रतिवर्ष की परम्परा के अनुसार इस वर्ष भी अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ दिल्ली एवं अनुसन्धान केन्द्र परोपकारिणी सभा के संयुक्त प्रयास से वेदगोष्ठी का आयोजन किया जायेगा। इस गोष्ठी में देश के विविध विद्वान् अपने शोधपूर्ण मौलिक विचार प्रस्तुत करेंगे। इस वर्ष वेदगोष्ठी का विचारणीय बिन्दु है- **वेदों में शिक्षा के सिद्धान्त।** जो विद्वान् गोष्ठी में शोधपत्र प्रेषित करना चाहते हैं, वे १५ अक्टूबर तक सभा के पते पर प्रेषित करवा देवें। २७, २८, २९ नवम्बर को ऋषि बलिदान समारोह के कार्यक्रमों के साथ-साथ वेदगोष्ठी भी चलती रहेगी। ऋषि-भक्त इसे सुनने का लाभ उठा सकते हैं।

चतुर्वेद कण्ठस्थीकरण वेद प्रतियोगिता- प्रतिवर्ष आयोजित की जाने वाली इस प्रतियोगिता में २१ वर्ष तक के छात्र भाग ले सकते हैं। किसी भी वेद को आद्योपान्त स्मरण करके इस प्रतियोगिता में भाग लिया जा सकता है। जो छात्र जिस वेद पर गत वर्षों में पारितोषिक ग्रहण कर चुके हैं, वे उस वेद से अतिरिक्त वेद स्मरण करके भाग ले सकते हैं। २७ अक्टूबर को परीक्षा एवं २८ अक्टूबर को पुरस्कार-वितरण का कार्यक्रम होगा। जो छात्र इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हैं, वे अपने-अपने गुरुकुलों, आश्रमों, संस्थानों से आचार्य द्वारा अधिकृत पत्रक पर २-छायाचित्र सहित अपना परिचय १५ अक्टूबर, २०१७ तक आचार्य महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषि उद्यान, अजमेर के पते पर भेज दें।

सम्मान - प्रतिवर्ष विशिष्ट वैदिक विद्वान्, विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को इस समारोह में सम्मानित किया जाता है। इस वर्ष भी सम्मान -समारोह होगा। जिसमें अनेक विद्वान्-विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को सम्मानित किया जायेगा।

अक्टूबर के आरम्भ में अजमेर में हलकी ठंड होने लगती हैं, ऋषि उद्यान खुले में होने से सर्दी का प्रभाव कुछ अधिक रहेगा। रात्रि में कम्बल ओढ़ने जैसी ठण्ड रहेगी। जो समूह में रहना चाहते हैं उनकी निवास व्यवस्था ऋषि उद्यान में होगी और जो अपने निवास की व्यवस्था होटल-धर्मशाला में करवाना चाहते हैं, कृपया वे सभा कार्यालय से पूर्व सम्पर्क कर अग्रिम राशि जमा करवा कर कमरा आरक्षित करवा लें।

सभी से विशेष निवेदन है कि अपने आने की सूचना कम से कम एक सप्ताह पूर्व दे देवें, जिससे संख्या का अनुमान होकर तदनुसार व्यवस्था की जा सके।

सभी से निवेदन है कि १३४वें बलिदान समारोह में अपने परिवार व समाज के सभी कार्यकत्ताओं सहित पधार कर महर्षि को हार्दिक श्रद्धांजलि प्रदान करें, महर्षि दयानन्द के स्वप्न को साकार करने हेतु प्रेरणा उत्साह प्राप्त कर प्रचार-प्रसार को एक नई चेतना प्रदान करें।

ऋषि मेले में आमन्त्रित विद्वान्- प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु-अबोहर,आचार्य विजयपाल-झज्जर, स्वामी ऋतस्पति-होशंगाबाद, डॉ. ब्रह्ममुनि-महाराष्ट्र, डॉ. सुरेन्द्र कुमार-कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार, डॉ. वेदपाल-बड़ौत, आचार्या सूर्या देवी-शिवगंज, डॉ. विक्रम कुमार 'विवेकी'-चण्डीगढ़, डॉ. ज्ञानप्रकाश, डॉ. रूपकिशोर, डॉ. सोमदेव 'शतांशु', डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार, डॉ. कृष्णपाल सिंह-जयपुर, श्री सत्यानन्द आर्य- दिल्ली, श्री जगदीश शर्मा-जयपुर, श्री शिवकुमार चौधरी-इन्दौर, श्री जयदेव आर्य-राजकोट, श्री ठा. विक्रमसिंह-दिल्ली, डॉ. उदयन- तेलंगाना, श्री प्रकाश आर्य-महू, श्री सत्यपाल पथिक, प. भूपेन्द्र सिंह आदि।

इस समारोह हेतु आपका आर्थिक सहयोग आयकर की धारा '८०-जी' के अन्तर्गत दिए गये प्रावधान के अनुरूप कर मुक्त होगा। विदेश में निवास कर रहे धर्मप्रेमी सज्जन स्वदेश में होने वाले इस समारोह हेतु मुक्त हस्त से दान देकर देश का गौरव बढ़ाएँ। सभा को भारतीय शासन द्वारा विदेशों से दानस्वरूप दी गई राशि को प्राप्त करने की छूट प्राप्त है। आपका सहयोग ही हमारा सम्बल है। शुभकामनाओं सहित।

गजानन्द आर्य	डॉ. सुरेन्द्र कुमार	ओम मुनि
संरक्षक	कार्यकारी प्रधान	मन्त्री

सुना है आज हमारा ज़िक्र हुआ है
पं. गणपति शर्मा

सोमेश 'पाठक'

मानुष की तो औकात ही क्या? अरे! लोहा भी लोहा ले तो चकनाचूर हो जाये। बड़े-बड़े मेघों की गर्जना शान्त हो जाये। नदियाँ प्रवाह छोड़ दें, सिंह दहाड़ना छोड़ दें, पर्वत अकड़ना छोड़ दें कि 'बर्क' भी कड़कना छोड़ दे। इसे अतिशयोक्ति न समझ लेना, स्मरण रहे कि बात पं. गणपति शर्मा की हो रही है। वो वीर जिसे राजस्थान के 'चूरू' नगर ने सन् १८७३ में जना। वो वाक् योद्धा जिसने अनेक दिग्गजों को धूल चटा दी, धराशायी कर दिया, पं. भानीराम जी और श्रीमती सिणकारी बाई को पुत्र रूप में प्राप्त हुआ। बड़ा मेधावी बालक पाया पं. भानीराम जी ने। आप पाराशर गोत्री पारीक ब्राह्मण थे और पेशे से पुरोहित तथा वैद्य। इसलिये बेटे में संस्कार आना लाजमी ही था। बेटा जन्म से तो ब्राह्मण था ही, कर्म से भी ब्राह्मण था। लेकिन हमें खेद है कि इस ब्राह्मण के ब्राह्मणत्व का बखान करने में इतिहास मौन सा साध बैठा। कोई इतिहास का वीर ऐसा न हुआ जो पण्डित जी के जीवन पर लेखनी उठाता। क्या केवल पण्डित जी ही बचे थे जिनके प्रति ऐसी कृतघ्नता दिखाई गयी। खैर, धन्यवाद करता हूँ उन महान् आत्माओं का जो पण्डित जी पर चन्द पंक्तियाँ लिख गये और उन महानुभावों का भी जिन्होंने अब तक उन पंक्तियों को सुरक्षित रखा है। कुछ शास्त्रार्थ भी अमर स्वामी जी ने 'निर्णय के तट पर' ग्रन्थ में संगृहीत कर दिये। ये ही कुछ बातें हैं जिसके कारण नई पीढ़ी भी उस अलौकिक प्रतिभा के जीवन और विद्वत्ता के बारे में जान सकती है।

पण्डित जी का प्रारम्भिक अध्ययन चूरू में हुआ था। बुद्धि अच्छी पायी थी इसलिये छोटी उम्र में ही व्याकरण आदि शास्त्रों में अच्छी गति हो गयी थी। पं. कालूराम जी 'योगी' के उपदेशों को सुनकर आप आर्य समाजी बने। पं. कालूराम जी भी इतिहास का वो पन्ना है जिसे भुलाया नहीं जा सकता। ये महात्मा रामगढ़ शेखावाटी के रहने वाले थे तथा ऋषि दयानन्द के शिष्यों में से एक थे। अस्तु, इसके बाद पण्डित जी ने कुछ समय कानपुर में अध्ययन किया। फिर कुछ वर्षों तक काशी में रहे तथा एक वर्ष नदिया में भी रहे। फिर क्या था, उतर पड़े आर्य समाज के प्रचार-क्षेत्र में। हिला के रख दिया पण्डितों की थोथी बुनियादों को। जहाँ देखो वहीं पण्डित गणपति जी का खौफ बोलता था। पण्डित थरथराते थे इस नाम से। ऋषि दयानन्द के बाद वाग्मिता तथा शास्त्रार्थ-विजय में दूसरा स्थान पण्डित जी ने ही पाया था। जिसका एक बार भी पण्डित जी से पाला पड़ गया वो दुबारा कभी हिम्मत न जुटा सका सामने आने की। इतिहास उन्हें 'प्रतिवादी भयंकर' के नाम से जानता है। ऐसा प्रत्युत्पन्नमति युगों-युगों में कभी एक बार पैदा होता है।

पण्डित जी अत्यन्त मेधा सम्पन्न व्यक्ति थे। एक बार स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज ने पण्डित जी से पूछ लिया कि "आप व्याख्यान व शास्त्रार्थ में न्याय दर्शन के उद्धरण बहुत देते हैं, क्या सम्पूर्ण न्याय-पाठ आपको कण्ठस्थ है?" इस पर बड़ी विनम्रता से पण्डित जी ने उत्तर दिया "स्वामी जी, बहुत काल से पाठ नहीं किया है। आज आप परीक्षा ले लीजिये।" और तत्काल ही उल्टी आवृत्ति सुना दी। स्वामी जी स्तब्ध रह गये। ये वही स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज हैं जो कि दार्शनिक शिरोमणि थे और अत्यन्त उच्च कोटि के विद्वान् व विचारक थे और गुरुकुल ज्वालापुर के संस्थापक भी। स्वामी जी कभी किसी विद्वान् का व्याख्यान नहीं सुना करते थे और पूछने पर कहते थे कि "ये ग्रामोफोन के रिकॉर्ड हैं। इनमें कोई बात नई नहीं होती, इनके सुनने में समय क्यों नष्ट करूँ।" लेकिन पण्डित गणपति जी का व्याख्यान वे जरूर सुना करते थे। कहते थे कि इनके प्रत्येक भाषण में कुछ नई सामग्री मिलती है। नये पाठकों को ये जानकर आश्चर्य होगा कि इन्हीं स्वामी जी के साथ पं. गणपति जी का एक शास्त्रार्थ भी हुआ था। जो कि 'वृक्षों में जीव' विषय पर था। सौभाग्य से वह शास्त्रार्थ पं. रलाराम जी ने लेखबद्ध कर दिया था और खोजने पर आज भी उपलब्ध हो जाता है। दार्शनिकम्मन्यों

से निवेदन है कि एक बार इस शास्त्रार्थ का दर्शन करके देखें, कुछ और दर्शन हो न हो पर दर्शन के दर्शन जरूर हो जायेंगे और शायद दार्शनिकता का ज्वर भी उतर जाये। खैर!

राजस्थान के झालावाड़ में दिनांक १४ जनवरी सन् १९०६ को झालावाड़ नरेश के नाना महाराज बलभद्र सिंह की अध्यक्षता में आर्यसमाज और पौराणिकों में शास्त्रार्थ हुआ। आर्यसमाज की ओर से पं. गणपति जी मैदान में थे और विपक्ष में पं. जयदेव झा मीमांसकाचार्य। जयदेव जी ने पूर्वपक्ष प्रस्तुत किया। अगले ही क्षण पण्डित जी ने पूर्वपक्ष धराशायी कर दिया। जब जयदेव जी से कुछ भी कहते न बना और निग्रह स्थान में पहुँच गये तो बोले कि "आप यह न समझें कि मैं हार गया हूँ, कल पुन: शास्त्रार्थ होगा और उसमें पं. गणपति जी जो कहेंगे मैं उसका प्रत्यक्षर खण्डन करूँगा।" इस पर 'प्रतिवादी भयंकर' गणपति जी का उत्तर भी बड़े कमाल का था। वे बोले-"पं. जयदेव जी ने एक बड़ी विचित्र प्रतिज्ञा कर ली है कि मेरी बात का प्रत्यक्षर खण्डन करेंगे। मान लीजिये किसी वार्ता-प्रसंग में मैंने कह दिया-पं. जयदेव जी अपने माता-पिता की सन्तान हैं। क्या इसका प्रत्यक्षर खण्डन करते हुये पं. जयदेव जी यह कहेंगे कि- नहीं, मैं अपने माता-पिता की सन्तान नहीं हूँ।" इस पर श्रोताओं में हँसी की लहर दौड़ गयी और पं. जयदेव जी का भी ये हाल हो गया कि शर्म के मारे छ: महीने तक अपने घर से नहीं निकले।

पण्डित जी बड़े ही उदारमना और मृदुभाषी थे। उनकी वक्तृता का वर्णन कर पाने में हम असमर्थ हैं। हाँ, इतना सुना है कि उस दौर में (जब ध्वनि विस्तारक यन्त्रों (माइक) का किसी ने नाम तक नहीं सुना था) पण्डित जी को सुनने के लिये १५-१५ हजार की भीड़ एकत्रित होती थी और मन्त्रमुग्ध होकर उन्हें सुना करती थी। पण्डित जी ४-४ घण्टे तक धाराप्रवाह बोलते रहते थे। काश! कि हम भी उस भीड़ में शामिल हो पाते। पर हमें ऐसा सौभाग्य कहाँ? पण्डित जी शास्त्रार्थ में भी कभी कटुभाषा और तीक्ष्ण व्यंग्यों का प्रयोग नहीं करते थे । उनसे शास्त्रार्थ करने वाला प्रतिपक्षी भी उनका भक्त बन जाया करता था। पादरी जे. वी. फ्रेंक ऐसे ही व्यक्तियों में से एक थे। वे हारकर भी उनके व्यवहार से इतने प्रभावित हो गये थे कि आजीवन उनके मित्र बने रहे।

महाविद्वान् पं. शिवकुमार शास्त्री का नाम पौराणिक जगत् में बड़े आदर के साथ लिया जाता है। आप थे तो पौराणिक लेकिन पाण्डित्य कमाल का था। पं. गणपति जी की बड़ी हार्दिक इच्छा थी कि इस सूरमा से भी दो-दो हाथ किये जायें। अत: पं. ज्वालादत्त शर्मा जो कि स्वामी दयानन्द के शिष्य और व्याकरण के बड़े भारी विद्वान् थे (यह नाम भी इतिहास ने छिपा रखा है) को साथ लिया और पहुँच गये काशी। वहाँ जाकर पता चला कि शिवकुमार जी अपने गाँव गये हुये हैं। तो दोनों पण्डित गाँव पहुँच गये और 'मूर्तिपूजा तथा श्राद्ध' विषय पर शास्त्रार्थ करने की इच्छा व्यक्त कर दी। किन्हीं कारणों से वह शास्त्रार्थ तो न हो पाया पर पं. शिवकुमार शास्त्री पर इस दिग्विजयी की ऐसी छाप पड़ी कि बस पूछो मत। ये वही पं. शिवकुमार जी हैं जिन्होंने जाटों की ओर से आर्यसमाजियों के साथ शास्त्रार्थ करने का निश्चय किया था। विषय 'जाटों के यज्ञोपवीत धारण' का था। मगर जब पता चला कि सामने पं. गणपति जी हैं तो बिना शास्त्रार्थ किये ही अपनी हार स्वीकार कर ली थी तथा जाटों को ८०० रु. की दक्षिणा लौटा दी और मैदान छोड़कर चले गये थे। ऐसी धाक जमाने वाला कोई दूसरा शास्त्रार्थ महारथी अब तक पैदा न हुआ।

पण्डित जी ने अपने जीवन काल में अनेक शास्त्रार्थ किये। इटावा निवासी पं. भीमसेन शर्मा के साथ झालावाड़ में शास्त्रार्थ हुआ। इसका विवरण अब उपलब्ध नहीं होता। पं. आत्मानन्द जी के साथ कोटा में शास्त्रार्थ हुआ। यहाँ निरुत्तर होकर प्रतिपक्षी भाग गये थे। क्या करें, उनकी घटनायें ही न संजो पाये वरना बड़े-बड़े ग्रन्थ लिखे जा सकते थे उनकी निर्भीकता पर।

कहते हैं कि एक बार पण्डित जी कश्मीर की राजधानी श्रीनगर में ठहरे हुये थे। दैवयोग से पादरी जॉनसन भी वहां जा पहुँचा। यह स्वयं को बड़ा संस्कृतज्ञ समझता था। कश्मीरी पण्डित इसके सामने बोलने का साहस न करते थे। जिस कारण इसका घमण्ड और ज्यादा बढ़ा हुआ था। पर इसे अन्दाजा न था कि अब की बार पं. गणपति से सामना हो

जायेगा। वरना भूलकर भी श्रीनगर में कदम न रखता। शास्त्रार्थ शुरू हुआ।

पादरी- पण्डित जी आप कहाँ के रहने वाले हैं?

पण्डित जी- पण्डितों का कोई घर नहीं होता, सारी पृथ्वी मेरा घर है। शास्त्रार्थ करने से आपका प्रयोजन है आप शास्त्रार्थ कीजिये।

पादरी-तो आप हमसे शास्त्रार्थ करने आये हैं?

पण्डित जी- यह तो सर्वविदित है ही। चलो, पहले आप यही बतलायें कि 'शास्त्रार्थ' शब्द का क्या अर्थ है? क्या 'शास्त्र' से मतलब आपका छः शास्त्रों से है और क्या आपको यह ज्ञात है कि 'अर्थ' शब्द अनेकार्थ का वाचक है। 'अर्थ' अर्थात् धन, 'अर्थ' अर्थात् प्रयोजन, 'अर्थ' अर्थात् द्रव्य, गुण, कर्म। वैशेषिक दर्शन के अनुसार शास्त्र भी केवल छः नहीं हैं। धर्मशास्त्र है, अर्थशास्त्र है, नीतिशास्त्र है। आप जरा समझाइये कि आप किस शास्त्र का अर्थ करने आये हैं। जब आप 'शास्त्रार्थ' शब्द का अर्थ समझावेंगे, तब हम उत्तर देंगे।

इसके बाद पादरी ऐसा मूक हुआ कि शास्त्रार्थ के बारे में सोचना भी छोड़ गया। ऐसी प्रतिभा थी पण्डित गणपति शर्मा की कि जब चाहें, जहाँ चाहें, जिसे चाहें, उसे निरुत्तर कर दें। पण्डित जी की इस प्रतिभा पर आर्य जगत् गौरव करता था। ये तो ऐसा योद्धा था कि कहीं भी उतार दो हारने का तो प्रश्न ही नहीं उठता।

पण्डित जी के परिवार में अधिक लोग न थे। वे, उनकी माँ, उनकी पत्नी और उनका पुत्र चार लोग ही थे। उनकी पत्नी और पुत्र उनके सामने ही दुनियाँ से चल बसे थे। उनकी मृत्यु के बाद पण्डित जी तन-मन-धन से आर्यसमाज के लिये समर्पित हो गये थे। यह वाणी का धनी आर्य समाज की अधिक समय तक सेवा न कर सका। महज ३९ वर्ष की आयु में ही इन्हें दुनियाँ से जाना पड़ा। हम कल्पना भी कैसे करें कि इतनी अल्पायु में पण्डित जी इतने बड़े शास्त्रार्थ महारथी बन गये थे?

स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज का अजमेर में जैनियों से शास्त्रार्थ होने वाला था। शास्त्रार्थ की तिथि दिनांक २७ जून सन् १९१२ निश्चित हुयी थी। स्वामी जी ने अपने सहयोगार्थ पं. गणपति जी को बुलाया था। पर उस तिथि को पण्डित जी तो न पहुँच पाये, पण्डित जी की सूचना जरूर पहुँच गयी कि स्वामी जी की ही जन्म स्थली जगरावां (पंजाब) में पण्डित गणपति शर्मा का आकस्मिक निधन हो गया। हाय ये वज्राघात! लाखों तीरों का प्रहार! समन्दर भी सिसकियाँ भर गया होगा। आँखों से अश्रु नहीं रक्त निकलता होगा। हाय! बिजुली सी गिरी होगी आर्य जगत् की आशाओं पर। ऐसी विलक्षण प्रतिभा, ऐसा वाग्मी प्रवर, ऐसा निर्भीक, ऐसा ईश्वर-भक्त, ऐसा दयानन्द का अनुयायी सदा के लिये दुनियाँ से जा चुका था। आने वाले समय में पं. आर्यमुनि से शास्त्रार्थ होने वाला था। लेकिन फिर हो न सका। बिहार के नास्तिक विद्वान् पं. रामावतार शर्मा को गुरुकुल ज्वालापुर के वार्षिक उत्सव पर ललकारना था। पर वो भी दिल की दिल में ही रह गयी।

ऐसे आदर्श को गर हम आदर्श मानें तो आर्य जगत् का नक्शा ही बदल जाये। जन-जन में नव-चेतना आ जाये। आर्यसमाज के विद्वत्पूरित मञ्चों से एक बात प्रायः सुनने को मिलती है कि जो जाति अपना इतिहास भूल जाती है वह नष्ट हो जाती है। क्या आर्यसमाज स्वयं वही भूल नहीं कर रहा है? समाज के शीर्ष नेतृत्व का ये दायित्व है कि वो अपने गौरवमय आदर्शों को नई पीढ़ी के समक्ष प्रस्तुत करे, ताकि वह भी उनसे प्रेरणा ले सकें। पूर्वजों का सम्मान करने से स्वयं का भी सम्मान बढ़ता है। आशा और अपेक्षा है कि वर्तमान आदर्श पुराने आदर्शों को ओझल नहीं होने देगा, क्योंकि जो बड़ों को, पूर्ववर्ती आचार्यों को महत्त्व दे, वही आदर्श होता है, अन्यथा......

पं. नाथूराम शर्मा 'शंकर' की कुछ पंक्तियाँ कहना चाहता हूँ-

मानो न अलीक भूमिकम्प ही से काँपता है,
विद्युदादि वेगों से पहाड़ हिलता नहीं।
भानु का प्रकाश भव्य कारण विकास का है,
तारों की चमक पाय 'पद्म' खिलता नहीं।
'शंकर' रबीली कड़ी रेती रेत डालती है,
क्षुद्र छुरी छैनियों से हीरा छिलता नहीं।
हाय गणपति की अनूठी वक्तृता के बिना,
अन्य उपदेश सुने स्वाद मिलता नहीं।

आर्यजगत् के समाचार

१. प्रवेश सूचना- गुरुकुल आर्य नगर, हिसार, हरियाणा (मान्यता गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार) में सत्र २०१७-१८ में (कक्षा ५ से ९ तक) प्रवेश प्रारम्भ हो चुका है। नियमावली एवं अन्य जानकारी हेतु सम्पर्क करें- ९४६६३३५६८२, ९४६६६१३४१३

२. आवश्यकता- गुरुकुल आर्य नगर, हिसार, हरियाणा में १२वीं कक्षा तक संस्कृत साहित्य, व्याकरण एवं दर्शनादि पढ़ाने में सक्षम, संस्कृत सम्भाषण एवं वैदिक सिद्धान्त में रुचि रखने वाले एक संस्कृत अध्यापक की आवश्यकता है। सम्पर्क करें-९४६६३३५६८२,

website- www.gurukularyanagarhisar.org
e-mail- gurukularyanagar@gmail.com

३. शिविर- ५वाँ आर्य युवा-चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास शिविर-२०१७ सैनी नर्सिंग कॉलेज के संस्कार भवन में १९ से २५ जून २०१७ तक मोहाना मण्डी रोड, केसर नगर चौराहा स्थित कॉलेज, जयपुर में होगा। **सम्पर्क सूत्र- ०९८२८०१४०१८**

वैवाहिक

४. वधू चाहिये- आर्य परिवार, संस्कारित, जन्मतिथि- ०१/०८/१९९१, कद-.५ फुट-९ इंच.; शिक्षा- आई.आई.टी. पटना से बी.टैक, मैकेनिकल प्राइवेट कम्पनी में कार्यरत युवक हेतु आर्यसमाजी परिवार की समकक्ष संस्कारित युवती चाहिए। **सम्पर्क- ०९४१८४७७७१४**

चुनाव समाचार

५. आर्यसमाज दोहरिया, जि. भीलवाड़ा, राज. के चुनाव में **प्रधान-** श्री कन्हैयालाल साहू, **मन्त्री-**श्री धन्नालाल साहू, **कोषाध्यक्ष-** श्री रामकुमार खारोल को चुना गया।

६. आर्यसमाज महर्षि दयानन्द नगर, कोटा, राज. के चुनाव में **चुनाव अधिकारी-** श्री ओमप्रकाश तापड़िया के निर्देशन में चुनाव सम्पन्न हुए, **प्रधाना-** श्रीमती सुमन बाला सक्सेना, **मन्त्री-**श्री मूलचन्द आर्य, **कोषाध्यक्ष-** श्री शिवदयाल गुप्ता को चुना गया।

७- आर्यसमाज मल्हारगंज, इन्दौर के चुनाव में **चुनाव अधिकारी-** श्री रमेशचन्द्र गोयल की अध्यक्षता में चुनाव सम्पन्न हुए, **प्रधान-** डॉ. दक्षदेव गौड़, **मन्त्री-**डॉ. विनोद आहलुवालिया, **कोषाध्यक्ष-** सुश्री सुशीला शर्मा को चुना गया।

८. आर्यसमाज सरदारपुरा, जोधपुर, राज. के चुनाव में **संरक्षक-** श्री महेन्द्रसिंह चौहान व श्री हरेन्द्र कुमार आर्य, **प्रधान-** श्री एल.पी. वर्मा, **मन्त्री-** श्री मदनलाल गहलोत, **कोषाध्यक्ष-** श्री लक्ष्मणसिंह आर्य को चुना गया।

९- आर्यसमाज मन्दिर १६ डी, दयानन्द मार्ग (वकील रोड़), नई मण्डी, मुजफ्फरनगर के चुनाव में **प्रधान-** श्री आनन्दपाल सिंह आर्य, **मन्त्री-**श्री आर. पी. शर्मा, **कोषाध्यक्ष-** श्री गुलबीर सिंह आर्य को चुना गया।

१०. आर्यसमाज राजनगर-२ पालम कॉलोनी, नई दिल्ली के चुनाव में **प्रधान-** श्री कर्मवीर सिंह आर्य, **मन्त्री-** श्री रतनसिंह आर्य, **कोषाध्यक्ष-**श्री भगतसिंह राठी को चुना गया।

११. आर्यसमाज देवी स्टोर चौराहा, गंगापुरसिटी राज. के चुनाव में **प्रधान-** श्री मदनमोहन गुप्ता, मन्त्री- श्री सन्तोष कुमार गुप्ता, **कोषाध्यक्ष-** श्री गजानन्द गोयल बजाज को चुना गया।

१२. जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा नागौर राज. के चुनाव में **प्रधान-** श्री किसनाराम आर्य, **मन्त्री-** श्री यशमुनि वानप्रस्थी, **कोषाध्यक्ष-** श्री राजेन्द्र पडिहार को चुना गया।

१३. आर्यसमाज बी-६९, सैक्टर-३३, नोएडा के चुनाव में **प्रधान-** श्री रवीन्द्र सेठ, **मन्त्री-** कै. अशोक गुलाटी, **कोषाध्यक्ष-** श्री नरेन्द्र सूद को चुना गया।

१४. आर्यसमाज, शामली, उ.प्र. के चुनाव में **प्रधान-** श्री पूरणचन्द आर्य, **मन्त्री-** श्री रामेश्वरदयाल, **कोषाध्यक्ष-**श्री गिरधारीलाल आर्य को चुना गया।

१५. आर्य केन्द्रीय सभा, सोनीपत के चुनाव में **प्रधान-** श्री रणधीर सिंह ढुल्ल, **मन्त्री-** श्री सुदर्शन आर्य, **कोषाध्यक्ष-** श्री अशोक आर्य को चुना गया।

१६. आर्यसमाज मगरा पूंजला, जोधपुर के चुनाव में **प्रधान-** श्री सम्पतराज देवड़ा, **मन्त्री-** श्री महेश गहलोत, **कोषाध्यक्ष-** श्री हंसराज गहलोत को चुना गया।

शोक संदेश

१७.महिला आर्य समाज संदेश विहार, दिल्ली की भूतपूर्व प्रधाना **श्रीमती सुदेश कपूर** (धर्मपत्नी श्री जसवन्त सिंह कपूर) का निधन २९ मई २०१७ को हो गया है। आर्य समाज संदेश विहार की स्थापना, विद्वानों का निरन्तर सत्संग, अतिथि यज्ञ में अपार श्रद्धा आदि विशेषताओं के कारण वे आर्यसमाज में सम्माननीय थीं। स्वयं यज्ञ करना व अन्यों को भी यज्ञ हेतु प्रेरित करना, उनका ध्येय था। विद्वानों के संग से उन्होंने परिवार को भी आर्यसमाज के रंग में रंगा। फलतः तीनों पुत्र व पुत्रवधुएँ सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहते हैं। परोपकारिणी सभा उनके निधन पर शोक प्रकट करते हुए हार्दिक श्रद्धाञ्जलि अर्पित करती है।

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित जमानी-आश्रम, इटारसी में आयोजित आर्य वीर दल शिविर की झलकियाँ

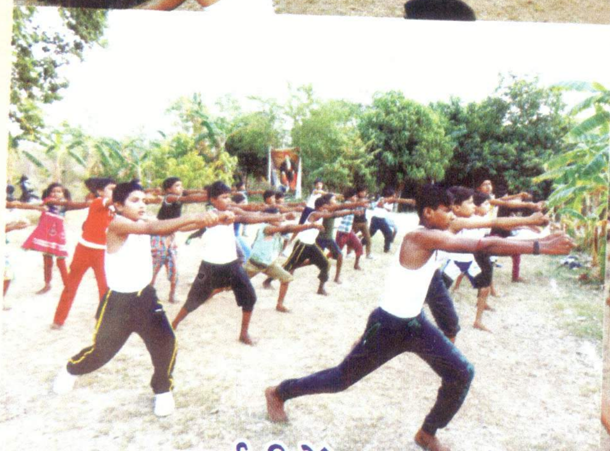

आर्यवीरों द्वारा जूडो-कराटे एवं लाठी का प्रदर्शन

आर जे/ए जे/80/2015-2017 तक प्रेषण : १५ जून , २०१७ आर.एन.आई. ३९५९/५९

शास्त्रार्थ महारथी

पं. गणपति शर्मा

पुण्यतिथि - २७ जून

सम्बन्धित विवरण पृष्ठ संख्या-३१

प्रेषकः
परोपकारिणी सभा
दयानन्द आश्रम, केसरगंज,
अजमेर (राजस्थान) ३०५००१

SCANNED
20 JUN 2017
Name....................